



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 187]

नई दिल्ली, सोमवार, जुलाई 5, 2010/आषाढ़ 14, 1932

No. 187]

NEW DELHI, MONDAY, JULY 5, 2010/ASADHA 14, 1932

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी तथा संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 5 जुलाई, 2010

अंतिम जांच परिणाम

(निर्णायक समीक्षा)

**विषय :** जापान तथा बेलारूस के मूल के या वहां से निर्यातित एक्रेलिक फाइबर के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा जांच ।

**फा. सं. 15/34/2008-डीजीएडी.**—यतः वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क या अतिरिक्त शुल्क का निर्धारण एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें आगे प्राधिकारी कहा गया है) ने दिनांक 10-11-2004 की अधिसूचना सं. 15/04/2003-डीजीएडी के तहत जापान के मूल के या वहां से निर्यातित एक्रेलिक फाइबर (जिसे आगे संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयात पर पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की सिफारिश करते हुए अपनी समीक्षा जांच में अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित किए थे। मूल पाटनरोधी जांच दिनांक 7-1-1998 को शुरू की गई थी और दिनांक 24-12-1998 के अंतिम जांच परिणाम संबंधी अधिसूचना सं. 32/1/975 डीजीएडी के तहत इटली, स्पेन, पुर्तगाल और जापान पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश की गई थी। तथापि, प्रथम निर्णायक समीक्षा में पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की सिफारिश केवल जापान के बारे में की गई थी। जांच परिणामों के आधार पर राजस्व विभाग द्वारा दिनांक 21-12-2004 की अधिसूचना सं. 114/2004-सी.शु. के तहत संबद्ध वस्तु पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था।

2. और यतः, प्राधिकारी ने बेलारूस के मूल के या वहां से निर्यातित एक्रेलिक फाइबर के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करते हुए पाटनरोधी जांच में अपने जांच परिणाम 7 दिसम्बर, 2004 की अधिसूचना सं. 14/5/2003 के तहत अधिसूचित किए थे। जांच परिणामों के आधार पर राजस्व विभाग द्वारा दिनांक 30-12-2004 की अधिसूचना सं. 117/2004-सी.शु. के तहत संबद्ध वस्तु पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था।

3. फोरम ऑफ एक्रेलिक फाइबर मैन्यु, नई दिल्ली ने भाग लेने वाली कंपनियों अर्थात् मै. इंडियन एक्रेलिक्स लि., मै. पशुपति एक्रीलॉन लि. तथा मै. वर्धमान एक्रीलिक्स लि. के जरिए सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का निर्धारण एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण), नियमावली, 1995 के नियम 23 के साथ पठित वर्ष 1995 में यथासंशोधित सी.शु. टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9 क (5) के अंतर्गत जापान एवं बेलारूस से एक्रेलिक फाइबर के आयातों पर पूर्व में लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा का अनुरोध करते हुए एक आवेदन के साथ प्राधिकारी से संपर्क किया था। इस आवेदन में आवेदक ने जापान और बेलारूस के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा की जरूरत की पुष्टि की थी। याचिकाकर्ता ने प्रथमदृष्टया साक्ष्य के साथ यह दावा किया था कि इन देशों से संबद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति से पाटन और क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है और उसने संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क को आगे और 5 वर्ष की अवधि तक जारी रखने और उसकी राशि को बढ़ाने का अनुरोध किया है।

4. और यतः डब्ल्यू पी सं. 2006 की 16893 में माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय के इस निर्णय को ध्यान में रखते हुए कि निर्णायक समीक्षा अनिवार्य है, प्राधिकारी ने लागू शुल्क को निरंतर जारी रखने की जरूरत और इस बात की समीक्षा करने के लिए कि क्या शुल्क समाप्त किए जाने से पाटन और क्षति जारी रखने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है, पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9 क(5) के अनुसार 6 जुलाई, 2009 को एक निर्णायक समीक्षा शुरू की थी।

#### क. प्रक्रिया

5. इस जांच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है:

i) समीक्षा जांच की शुरुआत के बाद प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार प्रश्नावली का उत्तर तथा आवश्यक सूचना मांगते हुए घरेलू उद्योग, संबद्ध देशों में समस्त ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों तथा ज्ञात आयातकों को अधिसूचित किया।

ii) नियम 6(2) के अनुसार जांच की शुरुआत के बारे में नई दिल्ली स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को इस अनुरोध के साथ सूचित किया गया था कि वे निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह दें।

iii) प्राधिकारी ने संगत सूचना मांगते हुए जापान और बेलारूस के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावलियां भेजीं।

क्र.सं.	कंपनी का नाम
1.	मै. जे एस सी "पॉलीमिर", 211440, नोवोपोलोस्क, विटेंस्क रीजन, बेलारूस गणराज्य
2.	इटोसू कार्पो., 5-1, कीटाओयामा 2- कॉम मिनाटो-कू,

	टोक्यो 107-8077, जापान, दूरभाष: 03-3497-2121
3.	असाही कसेई कैमिकल्स, 1-105 कंडाजिनबोचो, चिओडा-कू टोक्या 101-8101 जापान
4.	मित्सुई एंड कंपनी, बिल्डिंग 2-1, ओहटेमाची 1-कोम चिओडा-कू, टोक्यो 100-0004, जापान

iv) उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में बेलारूस के केवल एक निर्यातक मै. जे एस सी पोलीमिर ने प्रश्नावली का उत्तर दिया

v) पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(4) के अनुसार आवश्यक सूचना मांगने के लिए भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों, प्रयोक्ताओं और एसो. को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं :

क्र. सं.	कंपनी का नाम
1.	राजस्थान स्पि. एंड विवि. मिल्स लि., भीलवाडा भवन, 40-41, कम्यूनिटी सेंटर, नई दिल्ली-110065
2.	वर्धमान स्पि. एंड जनरल मिल्स चंडीगढ़ रोड, लुधियाना- 1410011, पंजाब
3.	दीपक स्पिनर्स लि. एस सी ओ 16, दूसरा तल, सेक्टर 26, चंडीगढ़-160019
4.	मालवा कॉटन स्पिनिंग मिल्स लि. इंड एरिया, "ए" लुधियाना- 141003, पंजाब
5.	शिवालिया स्पि. एंड विवि. मिल्स (प्रा) लि. गांव धंदारी खुर्द, जी टी रोड, धंदारी खुर्द, लुधियाना
6.	दीपक स्पिनर्स लि. 121, इंड एरिया, जिला सोलन बड़ी (हि. प्र.)
7.	शिवा फैब्रीकेटर (प्रा.) लि., गांव इराक, कोहारा माछीवाड़ा रोड, माछीवाड़ा, जिला लुधियाना
8.	सुप्रीम टैक्स मार्ट लि. 424 इंड एरिया-ए, चीमा चौक, लुधियाना
9.	योगेन्द्र वर्स्टेड लि., गांव लाल कला, नीलम बृज के निकट, तहसील समराला, जिला-लुधियाना
10.	श्री राजस्थान सिंटेक्स लि. पो. बा. 5, सिमालवाड़ा रोड, गांव उदयपुर, डूंगरपुर, राजस्थान
11.	बांसवाड़ा सिंटेक्स लि. इंड एरिया, दहाद रोड, पो. बा. 21, बांसवाड़ा, राजस्थान
12.	गंगा एक्रावूल्स लि. जी टी रोड, गांव कोटशेखों, द खन्ना, लुधियाना

13.	शीतल फाइबर्स लि. ए-17, फोकल प्वाइंट (एक्स), जालंधर
14.	अरीसुदाना इंड लि. गांव- जासपालांग (दोराहा), तहसील -खन्ना, लुधियाना
15.	स्पोर्ट किंग इंडिया लि. गांव मेहरबान, रेहोन रोड, लुधियाना
16.	टेक्सास वूलन मिल्स (प्रा.) लि. माछीवाड़ा रोड, कोहरा, जिला लुधियाना
17.	जिदल कोटेक्स लि. वी पी ओ जुजियाना, जी टी रोड, लुधियाना
18.	गर्ग एक्रीलिक्स लि. कंगनवाल रोड, पी ओ जुजियाना, जी टी रोड, लुधियाना

vi) वर्तमान समीक्षा के प्रयोजनार्थ जांच अवधि 1 जून, 2008 से 31 दिसंबर, 2008 तक (12 माह) की है। तथापि क्षति विश्लेषण में वर्ष 2005-06, 2006-07, 2007-08 तथा जनवरी 2008- दिसं. 2008 शामिल हैं।

vii) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से पिछले पांच वर्षों और जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरों की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया था;

viii) क्षति जांच हेतु संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित घरेलू उत्पादकों ने अपनी लागत एवं क्षति संबंधी सूचना उपलब्ध कराई है।

क. मै. इंडियन एक्रीलिक लि.;

ख. मै. पशुपति एक्रीलोन;

ग. मै. वर्धमान एक्रीलिक

ix) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए समस्त विचारों और किए गए अनुरोधों पर वर्तमान जांच हेतु संगत समझी गई सीमा तक विचार किया है।

x) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया जिसे हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण हेतु खुला रखा;

xi) प्राधिकारी ने हुई क्षति की जांच करना तथा सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) और आवेदकों द्वारा प्रस्तुत सूचना के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु की इष्टतम उत्पादन लागत और उसे बनाने तथा बेचने की लागत निकालने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना का संभव सीमा तक सत्यापन किया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ;

xii) प्राधिकारी ने नियमानुसार बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे, सामान्य मूल्य तथा पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए सहयोगी निर्यातक अर्थात् जे एस सी नाफ्तान पॉलीमिर, बेलारूस के आंकड़ों का मौके पर सत्यापन भी किया।

xiii) हितबद्ध पक्षकारों की मौखिक सुनवाई करने के लिए प्राधिकारी ने 18 दिसंबर, 2009 को एक सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की जिसमें घरेलू उद्योग के प्रतिनिधियों तथा बेलारूस के संबद्ध वस्तु के निर्यातक ने भाग लिया था। सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाले पक्षकारों से मौखिक रूप से व्यक्त विचारों के लिखित अनुरोध दायर करने का आग्रह किया गया था। हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों/उत्तरों पर इस जांच परिणाम में उस सीमा तक विचार किया गया है और उन्हें शामिल किया गया है जिस सीमा तक वे संगत हैं और साक्ष्य के साथ पुष्टिकृत हैं।

xiv) पाटनरोधी नियमावली के नियम 16 के अंतर्गत ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को 8 जून, 2010 को वर्तमान जांच परिणाम हेतु आवश्यक आधारों/तथ्य का प्रकटन विवरण जारी किया गया था और उस पर प्राप्त टिप्पणियों पर अंतिम जांच परिणाम में उचित विचार किया गया है।

xv) \*\*\*यह चिन्ह इस विवरण में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है।

## ख. विचाराधीन उत्पाद और "समान वस्तु"

6. मूल जांच, पूर्ववर्ती निर्णायक समीक्षा और इस निर्णायक समीक्षा में शामिल उत्पाद एक्रेलिक फाइबर है। एक्रेलिक फाइबर सिंथेटिक पॉलीमर की एक लंबी श्रृंखला होता है जिसमें भार के रूप में कम से कम 90% एक्रीलोनाइट्राइल यूनिटें होती हैं। एक्रेलिक फाइबर, एक्रेलिक स्टेपल फाइबर, एक्रेलिक टो या एक्रेलिक टॉप हो सकता है। एक्रेलिक स्टेपल फाइबर, एक्रेलिक टो या एक्रेलिक टॉप को बाजारी भाषा में एक्रेलिक फाइबर के नाम से जाना जाता है। एक्रेलिक स्टेपल फाइबर तथा एक्रेलिक टो के बीच एकमात्र अंतर लंबाई में अंतर का होता है। यदि लंबाई 2 मीटर से अधिक होती है तो उसे टो कहा जाता है और लंबाई में काटे जाने की स्थिति में उसे स्टेपल फाइबर कहा जाता है। यह सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 75 के अंतर्गत वर्गीकृत है। यह सी. शु. टैरिफ अधिनियम की अनुसूची 1 के शीर्ष 550130 तथा 550330 के अंतर्गत पुनः वर्गीकृत है। तथापि, यह वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है।

7. इस पहलू के बारे में किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने कोई अनुरोध दायर नहीं किया है।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

8. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच है और किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने विचाराधीन उत्पाद के मुद्दे पर कोई तर्क नहीं दिया है। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु के समान वस्तु है।

### ग. घरेलू उद्योग का आधार और क्षेत्र

9. जांच शुरूआत के बाद फोरम ऑफ एक्रेलिक फाइबर मैन्यु., जिसमें मै. इंडियन एक्रीलिक लि., मै. वर्धमान एक्रीलिक लि. तथा मै. पशुपति एक्रीलोन लि. शामिल हैं, ने क्षति एवं लागत संबंधी सूचना दायर की। फोरम का हिस्सा भारतीय उत्पादन का 100% बनता है और इस प्रकार वह "आधार" की अपेक्षा की पूर्ति करता है और वह पाटनरोधी नियमावली के अर्थ के भीतर "घरेलू उद्योग" है।

10. घरेलू उद्योग और उसके आधार के बारे में किसी हितबद्ध पक्षकार ने कोई अनुरोध दायर नहीं किया है।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

11. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) में निम्नानुसार उपबंध है:-

"ख" "घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाएगा"।

12. वर्तमान समीक्षा याचिका फोरम ऑफ एक्रेलिक फाइबर मैन्यु., जिसमें मै. इंडियन एक्रीलिक लि., मै. वर्धमान एक्रीलिक लि. तथा मै. पशुपति एक्रीलोन लि. शामिल हैं, ने दायर की थी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि फोरम ऑफ एक्रेलिक फाइबर मैन्यु. का हिस्सा कुल भारतीय उत्पादन का 100% बनता है। अतः मै. इंडियन एक्रीलिक लि., मै. वर्धमान एक्रीलिक लि. तथा मै. पशुपति एक्रीलोन लि. पाटनरोधी नियमावली के अर्थ के भीतर "घरेलू उद्योग" हैं। आगे यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग और उसके आधार के बारे में किसी हितबद्ध पक्षकार ने कोई अनुरोध दायर नहीं किया है। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि आवेदकों के पास पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के अंतर्गत घरेलू उद्योग के रूप में आधार है।

**घ.1 सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण****जापान****सामान्य मूल्य**

13. जापान के किसी निर्यातक ने वर्तमान निर्णायक समीक्षा की शुरुआत का कोई उत्तर नहीं दिया है। अतः प्राधिकारी अपने पास उपलब्ध तथ्यों और सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण करते हैं। तदनुसार घरेलू उद्योग द्वारा सूचित कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों और कुशल घरेलू उद्योग के खपत के मानकों सहित समस्त अन्य मानकों के आधार पर जापान से संबद्ध वस्तु के सभी निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य ~~₹.₹.~~ अम. डॉ./मी.ट. निर्धारित किया गया है।

**निर्यात कीमत**

14. घरेलू उद्योग की प्रकटन विवरण के पश्चात टिप्पणियाः:-

- (i) जापान के लिए निर्यात कीमत जापान सीमाशुल्क आंकड़ों के आधार पर स्वीकार की गई है और पाटन मार्जिन नकारात्मक है। भारतीय उत्पादकों का अनुरोध है कि चूंकि डी जी सी आई एंड एस के अनुसार आयात उपलब्ध हैं, इसलिए समस्त अन्य आंकड़ों की तुलना में उन्हें तरजीह दी जानी चाहिए। प्राधिकारी द्वारा यही परंपरा अपनाई जाती है;
- (ii) इस मामले में विचाराधीन उत्पाद एक्रिलिक स्टेपल फाइबर, एक्रिलिक टो और एक्रिलिक टॉप है। तथापि, सीमाशुल्क वर्गीकरण में मोडाक्रेलिक भी शामिल है। मोडाक्रेलिक विचाराधीन उत्पाद के क्षेत्र में नहीं आता है। चूंकि सी.शु. वर्गीकरण में मोडाक्रीलिक शामिल है, इसलिए आयात कीमत के निर्धारण हेतु सीमाशुल्क आंकड़ों के सारांश पर भरोसा नहीं किया जा सकता। इसके अलावा, मोडाक्रेलिक फाइबर की कीमत एक्रिलिक फाइबर की कीमत से काफी अधिक होती है। भारतीय उत्पादक आयात का संपूर्ण विवरण (आई बी आई एस के अनुसार) संलग्न कर रहे हैं जिसमें भी मोडाक्रीलिक (अनुबंध-1) शामिल हैं। चूंकि मोडाक्रीलिक की कीमत एक्रिलिक फाइबर की कीमत से काफी अधिक है इसलिए आयात आंकड़ों के सारांश में काफी अधिक कीमत दिखाई गई है।
- (iii) एक्रिलिक फाइबर 2 सीमाशुल्क वर्गीकरणों अर्थात् 55013000 तथा 55033000 में वर्गीकृत है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकटन विवरण केवल 55013000 पर आधारित है। यदि अन्य वर्गीकरण के अंतर्गत सूचित आयात भी शामिल कर लिए जाएं तो मोडाक्रीलिक को शामिल करने के बाद भी औसत आयात कीमत प्रकटन विवरण में ली गई कीमत से काफी कम बनती है।

- (iv) इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि (क) मोडाक्रीलिक को भी आयात के आंकड़ों में शामिल किया गया है; (ख) जापान द्वारा 55033000 के अंतर्गत सूचित निर्यात शामिल नहीं किए गए हैं, भारतीय उत्पादकों का अनुरोध है कि पाटन मार्जिन की समीक्षा की जाए। यह देखा जा सकेगा कि पाटन मार्जिन नकारात्मक है भले ही जापान सीमाशुल्क आंकड़ों में मोडाक्रीलिक को शामिल करते हुए विचार किया जाए। तथापि, मोडाक्रीलिक को अलग रखने पर पाटन मार्जिन अत्यंत सकारात्मक है।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

15. प्राधिकारी ने जापान की निर्यात कीमत हेतु आधार के रूप में वर्ल्ड ट्रेड एटलस के आंकड़ों पर विचार किया है क्योंकि उनमें डी जी सी आई एंड एस की तुलना में जापान से हुए निर्यातों की मात्रा अधिक सूचित की गई है। इसके अलावा, संबद्ध वस्तु की भारित औसत एफ ओ बी कीमत की गणना दोनों सीमाशुल्क वर्गीकरणों अर्थात् 55013000 और 55033000 के आधार पर की गई है। जहां तक मोडाक्रीलिक (एच एस कोड सं. 550130 तथा 550330) का संबंध है, उसे "मानव निर्मित सटेपल फाइबर" नामक व्यापक अध्याय शीर्ष 55 के अंतर्गत दिए गए विवरण के अनुसार एक फाइबर होने के कारण विचाराधीन उत्पाद में शामिल किया गया है। घरेलू उद्योग द्वारा दायर याचिका के अनुसार भी मोडाक्रीलिक को विचाराधीन उत्पाद में शामिल किया गया है। अतः प्राधिकारी मोडाक्रीलिक को विचाराधीन उत्पाद में शामिल मानते हैं और तदनुसार जापान के संबंध में निर्यात कीमत का निर्धारण करते हैं।

16. अतः निर्यात कीमत के संबंध में जापान से हुए निर्यातों की एफ ओ बी कीमत वर्ल्ड ट्रेड एटलस से प्राप्त की गई है जिसमें डी जी सी आई एंड एस (विदेश व्यापार के आंकड़ों की सरकारी एजेंसी) और आई बी आई एस की तुलना में जापान से हुए निर्यातों की अधिक मात्रा सूचित की गई है और उसे \*\*\* अम. डॉ./मी.ट. निर्धारित किया गया है। निवल निर्यात कीमत निकालने के लिए प्राधिकारी ने कमीशन (\*\*\*%), बैंक प्रभार (\*\*\*%), अंतरदेशीय भाड़े (\*\*\*%), तथा पत्तन प्रभार (\*\*\*%) के लिए समायोजनों की अनुमति दी है जिसे उसने उचित माना है। तदनुसार जापान के सभी निर्यातकों के लिए निवल निर्यात कीमत \*\*\* अम. डॉ./मी.ट. निर्धारित की गई है।

### बेलारूस

17. केवल एक निर्यातक/विनिर्माता मै जे एस सी नाफ्तान, प्लांट पॉलीमिर ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है। बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार (एम ई टी) संबंधी प्रश्नावली का जे एस सी नाफ्तान ने कोई उत्तर दायर नहीं किया है। निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सूचना का प्राधिकारी ने सत्यापन निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार निर्यातक के परिसर में किया था। एम ई टी प्रश्नावली के उत्तर के अभाव में प्राधिकारी नोट करते हैं कि उक्त निर्यातक ने बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे का दावा नहीं किया है। अतः प्राधिकारी एन एस सी नाफ्तान तथा बेलारूस के अन्य निर्यातकों, यदि कोई हो, को गैर बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान करते हैं। तदनुसार, सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के आधार पर किया गया है।



**सामान्य मूल्य**

18. चूंकि प्राधिकारी ने जे एस सी नाफ्तान को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान किया है, इसलिए सामान्य मूल्य का परिकलन 5% के उचित लाभ के साथ उत्पादन की परिकलित लागत के आधार पर किया गया है। इस प्रकार जे एस सी नाफ्तान के लिए परिकलित सामान्य मूल्य \*\*\* अम.डॉ./ मी. ट. निर्धारित किया गया है। प्राधिकारी ने अन्य निर्यातकों और बेलारूस के निर्यातकों, यदि कोई हों, के लिए यही सामान्य मूल्य अपनाया है।

**निर्यात कीमत**

19. जहां तक भारत को हुई निर्यात बिक्रियों का संबंध है, निर्यातक ने निर्यातक के आंकड़ों के सत्यापन के दौरान दस्तावेज अर्थात् बिक्री संविदा तथा संबंधित बीजक प्रस्तुत किए थे। इन दस्तावेजों में जांच अवधि के दौरान भारत को हुई किसी प्रत्यक्ष निर्यात बिक्री का उल्लेख नहीं था। इनमें केवल तीसरे देशों में तीसरे पक्षकार को हुई आपूर्तियों का उल्लेख है परंतु भारत को इन तीसरे देशों द्वारा किए गए निर्यात के बारे में कोई सूचना नहीं दी गई है। चूंकि जे एस सी नाफ्तान ने जांच अवधि के दौरान भारत को कोई प्रत्यक्ष निर्यात बिक्री नहीं की है, अतः प्राधिकारी ने निवल निर्यात कीमत निकालने के लिए इंटरनेशनल बिजनेस इनफारमेशन सर्विसेज (आई बी आई एस) जिसमें डी जी सी आई एंड एस तथा वर्ल्ड ट्रेड एटलस की तुलना में बेलारूस के लिए निर्यातों की उच्च मात्रा सूचित की गई है, से प्राप्त जांच अवधि के दौरान भारत को बेलारूस (समग्र देश) की निर्यात कीमत पर विचार किया है। इस प्रकार जे एस सी नाफ्तान तथा बेलारूस के अन्य निर्यातकों, यदि कोई हों, के लिए निवल निर्यात कीमत का निर्धारण समुद्री भाड़े (\*\*\*) अम.डॉ./मी.ट.), समुद्री बीमा (\*\*\*) अम.डॉ./मी.ट.), कमीशन (\*\*%), बैंक प्रभार (\*\*%), अंतरदेशीय भाड़े (\*\*%) और पत्तन व्यय (\*\*%) के संबंध में उचित समायोजनों पर विचार करने के बाद \*\*\* अम.डॉ./मी.ट. के रूप में किया गया है।

**घ.2 पाटन मार्जिन**

20. उपर्युक्तानुसार निर्धारित सामान्य मूल्य और कारखाना निर्यात कीमत की तुलना करते हुए जापान और बेलारूस के निर्यातकों के संबंध में पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है:-

देश	निर्यातक	सामान्य मूल्य अम.डॉ./ मी.ट.	निर्यात कीमत अम.डॉ./ मी.ट.	पाटन मार्जिन अम.डॉ./ मी.ट.	पाटन मार्जिन %
जापान	समस्त निर्यातक	***	***	नकारात्मक	नकारात्मक
बेलारूस	मै. जे एस सी नाफ्तान, पालीमिर, बेलारूस	***	***	***	9.78
	बेलारूस के अन्य निर्यातक	***	***	***	9.78

## ड. क्षति एवं कारणात्मक संबंध का निर्धारण

### घरेलू उद्योग के विचार

21. घरेलू उद्योग ने अपने अनुरोधों में अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित तर्क दिए हैं :

- (क) संबद्ध देशों से आयातों में समग्र रूप में वृद्धि हुई है ।
- (ख) घरेलू बाजार में बिक्री कीमत आयात कीमतों से सीधे संबंधित है । घरेलू उद्योग को विभिन्न स्रोतों से न्यूनतम आयात कीमत की बराबरी करनी होती है ।
- (ग) पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति से इन देशों से एक्रेलिक फाइबर की बाजार में कीमत में गिरावट आएगी । परिणामतः घरेलू उद्योग बिक्री कीमत घटाने के लिए बाध्य होगा ।
- (घ) बिक्री कीमत में आई किसी गिरावट का घरेलू उद्योग की लाभप्रदता, निवेश पर आय और नकद लाभ की स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा ।
- (ङ) अन्य दो कंपनियों - आई पी सी एल तथा कंसोलिडेटेड फाइबर को देश में इस उत्पाद के लगातार पाटन के मद्देनजर एक्रेलिक फाइबर से संबंधित अपने प्रचालन बंद करने के लिए बाध्य होना पड़ा । आई पी सी एल को एक्रेलिक फाइबर में नकारात्मक मूल्यवर्धन उठाना पड़ा । आबद्ध रूप से उत्पादित एक्रिलोनाइट्राइट की कीमत पर विचार करते हुए कंपनी के समक्ष अपेक्षाकृत नकारात्मक मूल्यवर्धन की समस्या उत्पन्न हुई । इसके अलावा, कंसोलिडेटेड फाइबर द्वारा केवल एक्रेलिक फाइबर का उत्पादन किया जा रहा था और वह अपना उत्पादन बंद करने के लिए बाध्य हुई है । इन दोनों कंपनियों को क्षति देश में उत्पाद के सतत पाटन के कारण हुई थी ।
- (च) घरेलू उद्योग को देश में उत्पाद के सतत पाटन के कारण क्षति हुई है । इनमें से अनेक स्रोतों पर या तो पाटनरोधी शुल्क लागू है या उसे हाल ही में समाप्त कर दिया गया है । अतः इस निर्णायक समीक्षा जांच में घरेलू उद्योग को हुई क्षति को मौजूदा शुल्क के आलोक में देखने की जरूरत है ।
- (छ) भारत में एक्रेलिक फाइबर की मांग कम हुई है । तथापि, जहां विश्व में एक्रेलिक फाइबर की क्षमता मांग से काफी अधिक है वहीं संबद्ध देशों के उत्पादकों द्वारा निर्यात बाजारों पर स्पष्ट तौर पर विचार करते हुए अपनी घरेलू मांग में वृद्धि के अननुपातिक रूप से क्षमताओं का विस्तार किया जा रहा है । इस प्रकार की क्षमता विस्तार से अन्य उत्पादकों के समक्ष स्वाभाविक खतरा उत्पन्न हो गया है ।
- (ज) आयात अभी भी पाटित कीमतों पर जारी हैं और पाटित आयातों की मात्रा वर्तमान जांच में काफी अधिक स्तर पर बनी हुई है । मूल जांच के समय विद्यमान परिस्थितियां आज भी मौजूद हैं । इन परिस्थितियों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है जिससे यही पता चलता है कि पाटन उच्चतर स्तर पर पुनः किया जाएगा ।
- (झ) जापान और बेलारूस के उत्पादकों द्वारा सृजित क्षमता उनके स्थानीय बाजार की मांग से काफी अधिक है । निम्नलिखित तालिका से यह पता चलेगा कि इन देशों में घरेलू मांग इन देशों में स्थापित क्षमताओं की तुलना में व्यवहारिक रूप से नगण्य है । वस्तुतः जापान के संबंध में यह कहना उचित नहीं होगा कि जापान के उत्पादकों के पास निर्यात बाजार पर गौर करने के अलावा कोई व्यावहारिक विकल्प नहीं है । 2000 मी.ट. की घरेलू मांग की तुलना में जापान के उत्पादकों के पास 293000 मी.ट. की क्षमताएं हैं । इसी प्रकार बेलारूस के संबंध में 70,000 मी.ट. की क्षमता की तुलना में बेलारूस में घरेलू मांग बमुश्किल 20,000 मी.ट. की है ।

(ज) उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, उत्पादकता में वर्ष 2006-07 तक वृद्धि हुई और उसके बाद गिरावट आई । इसके अलावा, पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में गिरावट अधिक रही है ।

(ट) घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में आधार वर्ष से सुधार प्रदर्शित हुआ है । यद्यपि, घाटा लाभ में बदला है, परंतु उसमें जांच अवधि में पुनः गिरावट आई है ।

(ठ) घरेलू उद्योग संबद्ध देशों और अन्य देशों से संबद्ध वस्तु के सतत पाटन का सामना कर रहा है । इस बात का विश्वास करने का कोई कारण या औचित्य नहीं है कि शुल्क की समाप्ति से बड़ी मात्रा में पाटन में वृद्धि नहीं होगी अथवा वह जारी नहीं रहेगा और जिसकी वजह से घरेलू उद्योग को क्षति नहीं होगी ।

(ड) संबद्ध देशों से आयातों में समग्र रूप में वृद्धि हुई है जिससे आयातों के बाजार हिस्से में बढ़ोत्तरी हुई है ।

(ढ) लाभप्रदता में तब गिरावट आनी शुरू हुई जब पाटित आयात कीमतों से कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री की स्थिति उत्पन्न हुई है ।

#### मै. जे एस सी पालीमिर, बेलारूस के विचार

22. मै. जे एस सी पालीमिर ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति के मुद्दे पर निम्नलिखित तर्क दिए हैं:

- (क) पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति के निवारण का साधन नहीं है ।
- (ख) घरेलू उद्योग को क्षति पाटन से इतर कारकों से हुई है ।
- (ग) पाटनरोधी शुल्क एक दशक से अधिक समय से कई देशों से हुए आयातों पर जारी है । तथापि, घरेलू उद्योग की स्थिति में सुधार नहीं हुआ है ।
- (घ) क्षति की प्रमुख वजह कच्ची सामग्री की कीमत में वृद्धि है । इससे बिक्री कीमत में बढ़ोत्तरी हुई है ।
- (ङ) कीमतों में वृद्धि होने से प्रयोक्ता उद्योग अन्य विकल्पों की तलाश करने के लिए बाध्य होंगे । इसी तथ्य का उल्लेख इंडियन एक्रिलिक्स ने निदेशकों की रिपोर्ट में किया है ।
- (च) एक्रेलिक फाइबर की घरेलू मांग में गिरावट घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण है ।
- (छ) बेलारूस से हुए आयातों के कारण हुई क्षति के दावे का कोई औचित्य नहीं है ।
- (ज) कीमत ह्रास विकल्पों की उपलब्धता के कारण हुआ है न कि आयात कीमत के कारण ।
- (झ) समूची अवधि के दौरान बेलारूस से केवल 421 मी.ट. के आयात हुए हैं ।
- (ञ) निर्यातकों के लिए भारत लक्षित देश नहीं है ।
- (ट) क्षति थाईलैंड से कम कीमत पर हुए आयातों के कारण हुई है ।
- (ठ) घरेलू उद्योग के भौतिक मापदंडों में सकारात्मक वृद्धि देखी गई है ।
- (ड) जापान में बेशी क्षमता है न कि बेलारूस में ।
- (ढ) बेलारूस की निर्यात कीमत जापान और थाईलैंड से अधिक है ।

- (ण) आयातों और कुछेक घरेलू उत्पादकों के संयंत्र बंद होने के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।
- (त) कनसोलिडेटेड फाइबर का प्रचालन बंद होने का कारण अक्षमता और अन्य आंतरिक कारक रहा है।
- (थ) प्रचालन बंद होने के कुछेक कारण हैं - घरेलू मांग में गिरावट, विकल्पों से खतरा, कम कीमत पर हुए आयातों की अधिक मात्रा।
- (द) क्षमता उपयोग में गिरावट महज आंकड़ों की बाजीगरी है।
- (ध) आधार वर्ष से जांच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग में कोई गिरावट नहीं आई है।
- (न) घरेलू उद्योग ने वर्ष 2005-06 में स्थापित क्षमता 85000 मी.ट. दर्शाई है जबकि उसकी वास्तविक क्षमता 88500 मी.ट. थी।
- (प) इंडियन एंथ्रीलक्स को छोड़कर दो अन्य उत्पादक 100% से अधिक क्षमता उपयोग पर प्रचालन कर रहे हैं।
- (फ) घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में गिरावट मांग में आई गिरावट से कम रही है।
- (ब) आयातों के कारण कीमत ह्रास/न्यूनीकरण नहीं हुआ है।
- (म) वर्ष 2005-06 में उत्पादन लागत कम रही है, पाटनरोधी शुल्क लागू है तब भी घरेलू उद्योग कोई लाभ नहीं कमा सका है।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

23. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अपने अनुरोधों में प्रस्तुत विभिन्न तर्कों पर विचार किया है और घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने के मुद्दे की जांच प्राधिकारी के समक्ष दिए गए इन तर्कों के मद्देनजर की गई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि बेलारूस से वर्तमान पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक है। अतः प्राधिकारी संबद्ध देशों से हुए आयातों के पाटन और उनसे होने वाली क्षति की संभावना की जांच करने से पूर्व घरेलू उद्योग को हुई वर्तमान क्षति की जांच करने की कार्रवाई शुरू करते हैं।

### संचयी निर्धारण

24. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II (iii) में यह उपबंध है कि जब एक से अधिक देश से हुए किसी उत्पाद के आयात की एक साथ पाटनरोधी जांच की जा रही है तो प्राधिकारी के लिए केवल उस स्थिति में ऐसे आयातों के संचयी प्रभाव का निर्धारण अपेक्षित होता है जब वह यह निर्धारित करे कि :-

- (i) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में पुष्टिकृत पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त 2% से अधिक है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों की 3% से अधिक है अथवा जहां अलग-अलग देशों का निर्यात 3% से कम है वहां आयातों का संचयी हिस्सा समान वस्तु के आयातों के 7% से अधिक है, और

- (ii) आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को देखते हुए आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है ।

25. इस संबंध में निम्नलिखित बातें संगत हैं: -

(क) बेलारूस से पाटन मार्जिन निर्धारित सीमा से अधिक है ।

(ख) आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है क्योंकि संबद्ध देशों से हुए निर्यात भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत समान वस्तु से सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं जैसा कि निम्नलिखित सूचना से देखा जा सकेगा: -

- i) संबद्ध देशों के उत्पादकों द्वारा विनिर्मित उत्पाद में आपस में और घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद की तुलना में तुलनीय गुणधर्म हैं । दूसरे शब्दों में विभिन्न संबद्ध देशों द्वारा आपूर्त और घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्त वस्तुएं आपस में समान वस्तुएं हैं ।
- ii) ऐसे सामान्य पक्षकार हैं जो आयातित सामग्री और घरेलू सामग्री का उपयोग कर रहे हैं । अतः आयातित और घरेलू सामग्री का अदल-बदल कर उपयोग किया जा रहा है और घरेलू उत्पाद तथा आयातित उत्पाद के बीच प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा है ।
- iii) संबद्ध देशों से ऐसी आयातित सामग्री का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से कम है । इससे विदेशी उत्पादकों के बीच आपस में और भारतीय उत्पादकों के साथ भी प्रतिस्पर्धा की स्पष्ट तौर पर पुष्टि होती है ।
- iv) संबद्ध देशों के निर्यातकों और घरेलू उद्योग ने एक समान अवधि में समान ग्राहक को समान उत्पाद की बिक्री की है । याचिकाकर्ता द्वारा सीधे और अपने एजेंट तथा संबद्ध देशों के निर्यातकों के जरिए उत्पाद की बिक्री की जा रही है और वह अपने एजेंट के जरिए सीधे निर्यात भी कर रहा है । बिक्री माध्यम तुलनीय हैं ।
- v) प्रत्येक संबद्ध देश से हुए आयात की मात्रा काफी अधिक है ।
- vi) घरेलू उत्पादक और संबद्ध देशों के निर्यातकों द्वारा ग्राहकों की समान श्रेणी को समान उत्पाद की बिक्री की जाती है और ये दोनों उत्पाद समान बाजार में प्रतिस्पर्धा करते हैं । उपभोक्ता इन दोनों का एक दूसरे के स्थान पर उपयोग कर रहे हैं ।

26. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए आयातित उत्पादों और समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को देखते हुए प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू रूप से उत्पादित समान वस्तु पर जापान और बेलारूस से हुए संबद्ध वस्तु के आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है ।

27. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में यह उपबंध है कि क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव ; तथा (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच शामिल होगी । पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है । जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती ।

28. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II के पैरा (iv) में निम्नानुसार उल्लेख है :

"संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट, सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों; घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन शामिल होगा ।"

### पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव

29. पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है । इस संबंध में स्थिति निम्नानुसार है:-

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जन.,08 से दिसं.,08
आयात मात्रा					
बेलारूस	मी. ट.	2330	260	402	803
जापान	मी. ट.	770	1475	877	2342

संबद्ध देश	मी. ट.	3099	1736	1279	3145
अन्य देश	मी. ट.	7375	8708	6227	10143
कुल आयातक	मी. ट.	10475	10444	7505	13288
आयातों में बाजार हिस्सा					
बेलारूस	%	22.24	2.49	3.84	6.04
जापान	%	7.35	14.08	8.37	17.62
संबद्ध देश	%	29.59	16.57	12.21	23.66
अन्य देश	%	70.41	83.38	82.96	76.33
घ. उ. का उत्पादन	मी. ट.	75378	83868	77513	76840
संबद्ध देशों से आयात	मी. ट.	3099	1736	1279	3145
घरेलू उद्योग के उत्पादन के प्रतिशत के रूप में संबद्ध देशों से आयात	%	4.11	2.07	1.65	4.09

30. उपर्युक्त से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि :

- (क) आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में जापान से हुए आयात की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हुई है। पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद कुल आयातों में जापान का हिस्सा आधार वर्ष में 7.35% से बढ़कर जांच अवधि में 17.62% हो गया। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान बेलारूस से हुए आयात की मात्रा में यद्यपि, गिरावट आई तथापि, उसमें पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में वृद्धि प्रदर्शित हुई।
- (ख) आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से हुए संचयी आयातों में समग्र रूप में और भारत में हुए आयातों की तुलना में मामूली वृद्धि हुई है। पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान आयात की मात्रा दोगुने से अधिक रही है।

#### मांग, उत्पादन और बाजार हिस्सा

31. मांग और बाजार हिस्से में निम्नलिखित तालिका के अनुसार प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है:-

विवरण		2005-06	2006-07	2007-08	जन.,08 से दिसं.,08
	इकाई				
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.ट.	68249	75197	73098	69453
अन्य उत्पादक	मी.ट.	32661	6186	0	0
कुल आयातक	मी.ट.	10475	10444	7505	13288
कुल मांग	मी.ट.	111385	91827	80603	82741
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	82	72	74
मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	61.27	67.51	65.63	62.35
अन्य उत्पादक	%	29.32	6.74	0.00	0.00

संबद्ध देश	%	2.78	1.89	1.59	3.68
अन्य देशों से आयात	%	6.62	9.48	7.73	12.27

32. उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि :

- (क) संबद्ध वस्तु की मांग का निर्धारण घरेलू बिक्री और सभी देशों से हुए आयातों को जोड़कर किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक संबद्ध वस्तु की मांग में गिरावट आई है।
- (ख) अन्य घरेलू उत्पादकों का हिस्सा, जो आधार वर्ष के दौरान 29.32 प्रतिशत से घटकर जांच अवधि में शून्य हो गया है, ऐसा प्रतीत होता है कि इसे जांच अवधि के दौरान अन्य देशों से हुए भारी मात्रा में आयातों ने हड़प लिया है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए और इस तथ्य को देखते हुए कि संबद्ध देशों से हुए आयातों के बाजार हिस्से में मामूली वृद्धि हुई है तथा घरेलू उद्योग के हिस्से में भी मामूली वृद्धि हुई है, घरेलू उद्योग पर संबद्ध देशों से आयातों के प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव की पुष्टि नहीं होती है।

#### पाटित आयातों का कीमत प्रभाव-कीमत कटौती, हासकारी और न्यूनकारी प्रभाव:

33. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।

#### कीमत कटौती

34. निम्नलिखित तालिका से संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों के कारण हुई कीमत कटौती की मात्रा का पता चलता है :-

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जन.,08 से दिसं.,08
निवल बिक्री प्राप्ति	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	117.34	126.82	133.52
पहुंच कीमत					
बेलारूस	रु./किग्रा.	84.88	79.94	79.29	115.27
जापान	रु./किग्रा.	114.16	120.82	111.66	123.36
संबद्ध देश	रु./किग्रा.	92.16	114.68	101.49	119.31
कीमत कटौती					
बेलारूस	रु./किग्रा.	***	***	***	***
जापान	रु./किग्रा.	***	***	***	***
संबद्ध देश	रु./किग्रा.	***	***	***	***
कीमत कटौती (%)					
बेलारूस	%	***	***	***	***
जापान	%	***	***	***	***
संबद्ध देश	%	***	***	***	***

35. प्राधिकारी नोट करते हैं कि बेलारूस से हुए पाटित आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती हो रही है जबकि जापान से कीमत में नकरात्मक कटौती हो रही है।



**कीमत हास/न्यूनीकरण**

36. यह निर्धारण करने के लिए कि क्या संबद्ध देशों से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत में हास/न्यूनीकरण हो रहा है, प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान उत्पादन लागत तथा घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत की तुलना आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की जिसका उल्लेख निम्नलिखित तालिका में किया गया है :

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जन.,08 से दिसं.,08
उत्पादन की लागत	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	108.81	116.27	144.78
निवल बिक्री प्राप्ति	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	117.34	126.82	133.52

37. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि क्षति अवधि के दौरान उत्पादन लागत और निवल बिक्री कीमत, दोनों में वृद्धि हुई है तथापि, निवल बिक्री प्राप्ति में वृद्धि (अर्थात् आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 33%) उत्पादन लागत में हुई वृद्धि (अर्थात् आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 45%) से काफी कम रही है। इस प्रकार कीमत में हास हुआ है क्योंकि घरेलू उद्योग उत्पादन लागत में वृद्धि के अनुरूप अपनी निवल बिक्री कीमत वसूलने में सक्षम नहीं रहा है।

**घरेलू उद्योग से संबंधित आर्थिक मापदंड**

38. नियमावली के अनुबंध-11 में अपेक्षित है कि क्षति के विश्लेषण में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। जहां तक ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव का संबंध है, नियमों में आगे यह उपबंध है कि घरेलू उद्योग पर घाटित आयातों के प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक कारकों और बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों; घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारकों, पाटन मार्जिन की मात्रा; नकद प्रवाह, माल सूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा।

39. आर्थिक मापदंडों का विश्लेषण घरेलू उद्योग के तीनों घटकों अर्थात् मै. इंडियन एक्रीलिक्स, मै. वर्धमान एक्रीलिक्स और मै. पशुपति एक्रीलोन द्वारा प्रदत्त आंकड़ों के आधार पर किया गया है। इन मापदंडों का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है:-

**(क) उत्पादन, बिक्री, क्षमता और क्षमता उपयोग**

	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जन.,08 से दिसं.,08
स्थापित क्षमता	मी.ट.	85000	90000	90000	90000
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	106	106
उत्पादन	मी.ट.	75378	83868	77513	76840
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111	103	102
क्षमता उपयोग (%)	%	88.68	93.19	86.13	85.38
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105	97	96
बिक्री मात्रा	मी.ट.	68249	75197	73098	69453
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	110	107	102

40. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि :

- (i) घरेलू उद्योग के उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्री में वर्ष 2006-07 तक वृद्धि हुई और उसके बाद वर्ष 2007-08 तथा जांच अवधि में गिरावट आई ।
- (ii) घरेलू उद्योग क्षमता की सीमा तक अपना उत्पादन बढ़ाने में समर्थ नहीं रहा है जिसकी वजह से क्षमता उपयोग में गिरावट आई है ।

(ख) लाभप्रदता

41. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता, लाभ और नकद प्रवाह निम्नलिखित तालिका में दिया गया है:-

	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जन.,08 से दिसं.,08
उत्पादन की लागत	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	108.81	116.27	144.78
निवल बिक्री कीमत	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	117.34	126.82	133.52
लाभ/हानि	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	14	35	(307)
लाभ/हानि	रु./किग्रा.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	-100	15	38	-312
ब्याज	रु./किग्रा.	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	110	99	90
कर पूर्व लाभ	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	442	502	(1,067)
निवल स्थायी परिसंपत्ति	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	98	91	85
कार्यशील पूंजी	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	120	91	(30)
लगाई गई पूंजी - एन एफ ए	रु./किग्रा.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101	91	69
लगाई गई पूंजी पर आय (एन एफ ए आधार)	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	439	553	(1,551)
नकद लाभ	रु./लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	963	1,180	(2,064)

42. उपर्युक्त से यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में वर्ष 2007-08 तक सुधार हुआ है परंतु उसके बाद भारी गिरावट आई है । जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटा हुआ है । लगाई गई पूंजी पर आय और नकद लाभ की स्थिति वही रही है और वह जांच अवधि के दौरान नकारात्मक बन गया है ।

43. उपर्युक्त तालिका से यह देखा जाता है कि वर्ष दर वर्ष आधार पर घरेलू उद्योग वर्ष 2007-08 तक बिक्री लागत में हुई वृद्धि से अधिक घरेलू बिक्री कीमत को बढ़ाने में समर्थ रहा था। तथापि, जांच अवधि में यह स्थिति बदल गई और घरेलू उद्योग उसके बाद बिक्री लागत में वृद्धि के अनुरूप बिक्री प्राप्ति में बढ़ोत्तरी नहीं कर सका। आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में औसत बिक्री लागत में वर्ष 2005-06 की तुलना में जांच अवधि में 45% की वृद्धि हुई। इसी अवधि के दौरान औसत बिक्री कीमत में 33% की वृद्धि हुई। उत्पादन लागत में वृद्धि घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत में हुई वृद्धि से काफी अधिक रही है जिससे कीमत ह्रासकारी प्रभाव का पता चलता है।

#### (ग) रोजगार तथा मजदूरी

44. घरेलू उद्योग के रोजगार और मजदूरी के स्तर निम्नलिखित तालिका में दिए गए हैं जिससे यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान कर्मचारियों की संख्या में कमी आई है यद्यपि मजदूरी में वृद्धि हुई है :-

	2005-06	2006-07	2007-08	जन.,08 से दिसं.,08
कर्मचारियों की संख्या	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	100	100	97
मजदूरी लाख रुपए	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	105	114	119

#### (घ) उत्पादकता

45. प्रति कर्मचारी उत्पादन और प्रति दिन उत्पादन के संबंध में प्रदर्शित घरेलू उद्योग की उत्पादकता निम्नलिखित तालिका में दी गई है :-

	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जन.,08 से दिसं.,08
उत्पादन	मी.ट.	75378	83868	77513	76840
कर्मचारी	सं.	***	***	***	***
उत्पादकता	मी.ट./सं..	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111	103	105
उत्पादकता (350 दिन प्रति वर्ष मानते हुए)	मी.ट./दिवस	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111	103	102

आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार हुआ है

## (ड) मालसूची

	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जन., 08 से दिसं., 08
मालसूची	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	119	97	162
बिक्री मी.ट में	मी.ट.	68249	75197	73098	69453
बिक्री दिवसों की संख्या के लिए मालसूची	दिवस	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	108	90	159

46. क्षति अवधि के दौरान बिक्री दिवसों की संख्या के संबंध में औसत मालसूची में वृद्धि हुई है। आधार वर्ष में यह \*\*\* दिवसों के समतुल्य थी जबकि जांच अवधि में यह बढ़कर \*\*\* दिवस हो गई।

## (च) पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

47. जांच अवधि के दौरान क्षमता में कोई वृद्धि नहीं हुई है। जांच अवधि में नकारात्मक नकद लाभ के साथ पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

## (छ) वृद्धि

48. वर्ष 2007-08 तक उत्पादन, बिक्री, क्षमता उपयोग, लाभ एवं लाभप्रदता जैसे मापदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग की बिक्री सकारात्मक थी। तथापि, यह जांच अवधि में नकारात्मक बन गई।

## पाटन मार्जिन की मात्रा

49. बेलारूस के लिए पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक और पर्याप्त है। तथापि, जापान के लिए पाटन मार्जिन नकारात्मक है।

50. अतः यह देखा जाता है कि जांच अवधि में विचाराधीन उत्पाद के आयात अत्यधिक बने रहे। वर्ष 2007-08 तक गिरावट प्रदर्शित करने के बाद जांच अवधि में आयात मात्रा में पुनः पर्याप्त वृद्धि हुई। आयातों से घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती हो रही थी। वर्ष 2007-08 तक लाभ, निवेश पर आय, नकद लाभ में वृद्धि हुई और इनमें जांच अवधि में गिरावट आई। घरेलू उद्योग क्षति रहित कीमत से कम कीमत पर उत्पाद की बिक्री करने के लिए बाध्य हुआ। जांच अवधि में बेलारूस के लिए पाटन मार्जिन सकारात्मक है।

## च. क्षति और पाटन मार्जिन की मात्रा

51. प्राधिकारी द्वारा यथनिर्धारित घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की क्षतिरहित कीमत की तुलना जांच अवधि के दौरान क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु संबद्ध देशों से हुए आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है। इस प्रकार की गई तुलना से क्षति मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है:

क्षति मार्जिन	यू ओ एम	जे एस सी पॉलीमर	बेलारूस से अन्य निर्यातक	जापान
सी आई एफ कीमत	अम.डॉ./ मी.ट.	***	***	***
पहुंच कीमत	अम.डॉ./ मी.ट.	***	***	***
एन आई पी	अम.डॉ./ मी.ट.	***	***	***
क्षति मार्जिन	अम.डॉ./ मी.ट.	***	***	***
क्षति मार्जिन	%	10-15%	10-15%	3-8%

### छ. अन्य ज्ञात कारक और कारणात्मक संबंध

52. जैसा कि पूर्व में दर्ज किया गया है, प्रतिवादी निर्यातक ने जांच की कार्यवाही के दौरान अपने लिखित अनुरोधों में कई तर्क दिए हैं, जिनमें मुख्यतः यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग के समग्र निष्पादन में सुधार हुआ है और क्षति, यदि कोई हुई है, तो वह पाटित आयातों से इतर कारकों के कारण हुई है। प्राधिकारी द्वारा अनिवार्य कारकों और ऐसे अन्य कारकों के संदर्भ में हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों की जांच की गई है जिनसे घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ सकता है जो निम्नानुसार है :-

#### i) अन्य स्रोतों से हुए आयातों की मात्रा और कीमत

53. जांच अवधि के दौरान, संबद्ध देशों से इतर ऐसे कई देशों से आयात हुए हैं जिनके खिलाफ पाटनरोधी शुल्क लागू है। आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि जिन देशों पर पाटनरोधी शुल्क लागू है, उन देशों से हुए आयातों में भारी वृद्धि हुई है। जिन देशों पर शुल्क लागू नहीं है उन देशों से हुए आयातों में गिरावट आई है। इसके अलावा, संबद्ध वस्तु का आयात कई देशों से हुआ है और अलग-अलग देशों से हुए आयातों की मात्रा काफी कम तथा उन्हीं कीमत बैंडों में रही है।

#### ii) मांग में कमी और / अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

54. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की घरेलू मांग में लगभग 26% की गिरावट प्रदर्शित हुई है। यह नोट किया जाता है कि मांग में यह गिरावट कंसोलिडेटेड फाइबर द्वारा उत्पादन बंद किए जाने के समानांतर हुई है और मांग में आई गिरावट की मात्रा लगभग कंसोलिडेटेड फाइबर के उत्पादन के अनुरूप रही है। तथापि, उत्पाद की वर्तमान मांग वर्तमान भारतीय क्षमताओं के अनुरूप बनी हुई है। अतः यह सिद्ध नहीं किया गया है कि घरेलू उद्योग को वर्तमान क्षति देश में उत्पाद की मांग में कमी के कारण हुई है।

#### iii) विदेशी और घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

55. संबद्ध वस्तु मुक्त रूप से आयात योग्य है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार नहीं है। भागीदार घरेलू उद्योग की क्षमता देश में संबद्ध वस्तु की कुल क्षमता है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि, विभिन्न अन्य स्रोतों से आयातों के प्रमुख भाग पर पाटनरोधी शुल्क लागू है, तथापि इन स्रोतों से हुए आयातों पर पाटनरोधी शुल्क, असंदत्त पहुंच मूल्य अत्यंत कम है जिससे घरेलू बाजार हेतु विभिन्न स्रोतों के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा का पता चलता है।

## iv) प्रौद्योगिकी विकास और निर्यात निष्पादन

56. किसी भी पक्षकार ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति के कारण के रूप में प्रौद्योगिकी विकास से संबंधित कोई मुद्दा नहीं उठाया है। प्रौद्योगिकी में किसी पर्याप्त विकास से यह प्रतीत नहीं होता है कि वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति का प्रमुख कारण हो सकता है।

## v) निर्यात निष्पादन

57. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वर्ष से लेकर घरेलू उद्योग द्वारा विचाराधीन उत्पाद के निर्यात में भारी गिरावट आई है। यद्यपि, आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2007-08 के दौरान निर्यात बिक्री में वृद्धि हुई है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण केवल घरेलू निष्पादन के आधार पर किया गया है और क्षति यदि उसके निर्यात निष्पादन के कारण, कोई हुई हो, का कारण पाटित आयातों को नहीं माना गया है।

विवरण	इकाई	2005-06	2006-07	2007-08	जन.,08 से दिसं.,08
निर्यात बिक्री	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	118	119	55

## vi) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

58. जांच अवधि के दौरान श्रमिक उत्पादन तथा दैनिक उत्पादन के संबंध में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में सुधार प्रदर्शित हुआ है। अतः प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि उत्पादकता घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाला कारक नहीं है। वस्तुतः घरेलू उद्योग ने उत्पादकता में सुधार के जरिए अपने घरेलू प्रचालन में हुए घाटे को कम करने का प्रयास किया है।

## ज. पाटन एवं क्षति जारी रहने एवं उसकी पुनरावृत्ति रहने की संभावना

59. घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना की जांच करने के लिए प्राधिकारी के समक्ष निम्नलिखित तथ्य लाए गए हैं :-

(क) घरेलू उद्योग ने यह दलील दी है कि किसी निर्णायक समीक्षा में प्राधिकारी के लिए पाटन समाप्त करने हेतु शुल्क जारी रखने या उसकी राशि में परिवर्तन करने या उसे समाप्त करने के बारे में कोई निर्णय लेने हेतु पाटन एवं क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना की जांच करना अपेक्षित होता है।

(ख) संबद्ध देश के उत्पादकों द्वारा भारतीय बाजार में सामग्री का पाटन किया जा रहा है। यद्यपि, कच्ची सामग्री की कीमत में भारी वृद्धि हुई है, तथापि, निर्यातकों की निर्यात कीमत में आनुपातिक वृद्धि प्रदर्शित नहीं हुई है जिससे निर्यातकों द्वारा लागत समाहित किए जाने का पता चलता है।

- (ग) पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी के बावजूद जांच अवधि में संबद्ध देशों से हुए आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है ।
- (घ) जांच अवधि में पाटन मार्जिन का स्तर न केवल न्यूनतम है अपितु, काफी अधिक भी है ।
- (ङ) उत्पादकों के पास पर्याप्त बेशी क्षमताएं हैं और उनकी घरेलू मांग उनके द्वारा सृजित क्षमताओं से काफी कम है । जापान और बेलारूस के उत्पादकों द्वारा सृजित क्षमता उनके घरेलू बाजार में मांग की तुलना में काफी अधिक है । 2000 मी.ट. की घरेलू मांग की तुलना में जपानी उत्पादकों के पास 2, 93, 000 मी.ट. की क्षमता है । इसी प्रकार बेलारूस के संबंध में 70,000 मी.ट. की क्षमता की तुलना में बेलारूस में घरेलू मांग-बमुश्किल 20, 000 मी.ट. की है ।
- (च) उत्पाद की मांग में गिरावट को देखते हुए अंतर्राष्ट्रीय बाजार में एक्रेलिक फाइबर के उत्पादन में गिरावट प्रदर्शित हो रही है । शुल्क समाप्त किए जाने से घरेलू उद्योग को क्षति में वृद्धि होगी ।
- (छ) जापान और बेलारूस ने अपनी घरेलू मांग से अधिक उत्पादन क्षमताएं स्थापित की हैं । परिणामतः इन देशों के उत्पादक अपने उत्पाद के बाजार में गिरावट का सामना कर रहे हैं ।
- (ज) जापान के उत्पादक अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मांग के अभाव में अपने प्रचालनों को धीरे-धीरे बंद कर रहे हैं या उनमें कमी कर रहे हैं । शुल्क समाप्त किए जाने से उनके लिए पाटन द्वार खुल जाएंगे ।
- (झ) यद्यपि, कच्ची सामग्री की कीमत में भारी वृद्धि हुई है, तथापि, निर्यातकों की निर्यात कीमत में आनुपातिक वृद्धि प्रदर्शित नहीं हुई है जिससे प्रत्यक्षतः निर्यातकों द्वारा लागत समाहित किए जाने का पता चलता है ।
- (ट) निर्यातों का वर्तमान स्तर संबद्ध देशों के निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा सृजित क्षमताओं के अनुरूप नहीं है ।
- (ठ) तीसरे देशों को संबद्ध देशों को निर्यात काफी अधिक मात्रा में हुए हैं । शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में निर्यातों की मात्रा भारतीय बाजार में आ जाएगी क्योंकि भारतीय बाजार अत्यंत लाभदायक है ।

60. बेलारूस के प्रतिवादी निर्यातक को छोड़कर किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने क्षति की संभावना के बारे में कोई अनुरोध नहीं किया है । बेलारूस के निर्यातक द्वारा व्यक्त विचारों का ऊपर उल्लेख किया गया है ।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

61. प्राधिकारी नोट करते हैं कि जापान से हुए आयात की मात्रा में पूर्ववर्ती वर्ष अर्थात् 2007-08 के दौरान हुए 877 मी.ट. की मात्रा की तुलना में जांच अवधि के दौरान 2342 मी.ट. की उर्ध्वगामी वृद्धि हुई है। जिसमें 150% से अधिक की वृद्धि हुई है। इसके अलावा, पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद कुल आयातों में जापान का हिस्सा आधार वर्ष में 7.35% से बढ़कर जांच अवधि के दौरान 17.62% हो गया है। इससे शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में जापान से पाटन होने की संभावना और घरेलू उद्योग को परिणामी क्षति होने का पता चलता है। यद्यपि, वर्तमान कार्यवाही में जापान के लिए पाटन मार्जिन नकारात्मक है। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि जापान के संबंध में पाटनरोधी शुल्क का वर्तमान स्तर जारी रहेगा। बेलारूस के संबंध में संबद्ध वस्तु का एकमात्र उत्पादक/निर्यातक जे एस सी नाफ्तान (पोलिमिर) है। यह देखा गया है कि मै. जे एस सी नाफ्तान की क्षमता 63, 200 मी.ट. है और वर्ष 2008 में 98% तथा वर्ष 2009 में लगभग 91% क्षमता पर उत्पादन किया गया है। इसके अलावा, जे एस सी नाफ्तान का कुल निर्यात उसकी कुल बिक्रियों का लगभग 80% है और यह वर्ष 2008 के दौरान आशियान देशों को हुए कुल निर्यातों का लगभग 45% है। वर्ष 2009 के दौरान जे एस सी नाफ्तान के कुल निर्यात कुल बिक्रियों के लगभग 80% हुए हैं और आशियान देशों को निर्यात लगभग 60% रहे हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि बेलारूस में संबद्ध वस्तु के उत्पादन से मुख्यतः निर्यात बाजार की जरूरत की पूर्ति की जाती है जो एक ऐसा बड़ा घटक है जिसमें एशियाई देश शामिल हैं। अतः बेलारूस पर लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में यह मात्रा पाटित कीमत में भारत में आने की संभावना है। पाटित आयातों के कारण कीमत कटौती और/अथवा कम कीमत पर बिक्री के रूप में घरेलू उद्योग को क्षति होने की संभावना है।

62. प्राधिकारी ने क्षति मापदंडों के विश्लेषण, अन्य कारकों के कारणेत्तर विश्लेषण और पाटन तथा क्षति के संभावित विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि घरेलू उद्योग को जांच अवधि के दौरान क्षति हुई है और यह क्षति पाटित आयातों के कारण हुई है। इसके अलावा, संबद्ध देशों से पाटन होने और घरेलू उद्योग को परिणामी क्षति होने की संभावना है।

### **झ. भारतीय उद्योग के हित तथा अन्य मुद्दे**

63. पाटनरोधी शुल्क का उद्देश्य सामान्यतः पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहार द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय व्यापार में खुली एवं उचित प्रतिसपर्धा की स्थिति बहाल की जा सके जो देश के समान हित में है। पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देशों से होने वाले आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी।

### **ट. निष्कर्ष**

64. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद प्राधिकारी निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि:

- (i) बेलारूस से भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है। यद्यपि, जापान से यह कीमत जांच अवधि के दौरान सामान्य मूल्य से



अधिक है, तथापि, शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में जापान से पाटन होने और परिणामी क्षति होने की संभावना है।

(ii) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है;

(iii) यह वास्तविक क्षति बेलारूस से हुए पाटित आयातों के कारण हुई है और शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में जापान से हुए पाटन द्वारा क्षति होने की संभावना है।

## ठ. सिफारिशें

65. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने अपने प्रकटन विवरण पश्चात अनुरोध में कच्ची सामग्री की कीमत खासकर मिथाईल एक्रिलेट (एम ए) तथा एक्रिलोनाइट्राइल (ए सी एन) जो संबद्ध वस्तु के लिए प्रमुख कच्ची सामग्रियां हैं, में पर्याप्त अंतर के आधार पर बेंचमार्क के स्थान पर नियत रूप में शुल्क में संशोधन करने का अनुरोध किया है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने बताया है कि यदि संशोधन व्यवहारी न हो तो प्राधिकारी वर्तमान कच्ची सामग्री की कीमत प्रदर्शित करने के लिए लागत में हुई वृद्धि के अनुपात में बेंचमार्क में वृद्धि कर सकते हैं। इसके अलावा, पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश अम.डॉ. में करने का अनुरोध किया गया है।

66. प्राधिकारी ने इस मुद्दे की जांच की है और यह माना है कि संबद्ध देशों से हुए आयातों के पाटन और इस वजह से हुई क्षति की संभावना के सकारात्मक निर्धारण को ध्यान में रखते हुए इन देशों से हुए आयातों के खिलाफ इस उपाय को जारी रखना अपेक्षित है। तथापि, जापान और बेलारूस से पाटन के वर्तमान स्तर तथा घरेलू उद्योग के निष्पादन को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी का यह मत है कि लागू उपाय में उचित संशोधन किए जाने की जरूरत है। चूंकि जापान से पाटन मार्जिन नकारात्मक निर्धारित किया गया है इसलिए प्राधिकारी यह मानते हैं कि जापान के निर्यातकों के लिए पहले से लागू पाटनरोधी शुल्क पाटन एवं क्षति की संभावना के सकारात्मक निर्धारण के मद्देनजर जारी रखा जाएगी। दूसरी ओर बेलारूस के निर्यातकों पर पाटनरोधी शुल्क में सकारात्मक एवं संशोधित पाटन मार्जिन के मद्देनजर संशोधन किया जाता है। अतः प्राधिकारी यह आवश्यक समझते हैं और जापान तथा बेलारूस से संबद्ध वस्तु के आयातों पर निम्नानुसार निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से पाटनरोधी शुल्क की सिफारिश करते हैं।

67. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन, अथवा क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके। इस बात पर विचार करते हुए कि मूल जांच में शुल्क संदर्भ कीमत के आधार पर लागू किया गया था, प्राधिकारी जापान के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर निम्नलिखित तालिका के कॉलम 9 में उल्लिखित पहुंच मूल्य आयात के समय कम होने की स्थिति में कॉलम 9 में यथाउल्लिखित आयातों के अम. डॉ./मी.ट. में पहुंच मूल्य तथा संदर्भ कीमत के बीच के अंतर के रूप में निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क जारी रखने की सिफारिश करते हैं। बेलारूस के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में इस बात पर विचार करते हुए कि मूल जांच में शुल्क संदर्भ कीमत आधार पर लागू किया गया था, प्राधिकारी निम्नलिखित तालिका के कॉलम 9 में उल्लिखित राशि और आयात के समय संबद्ध वस्तु के आयातों के अम.डॉ./मी.ट. में पहुंच मूल्य के अंतर के रूप में निश्चयात्मक पाटनरोधी

शुल्क की सिफारिश करते हैं । इस प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य का निर्धारण सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित वस्तु के मूल्य जमा लागू मूल सीमाशुल्क के रूप में किया जाएगा ।

### शुल्क तालिका

क्र.सं.	उप-शीर्ष	वस्तु विवरण	निर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि (अम.डॉ./मी.ट.)
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	5501.30 5503.30	एक्रेलिक फाइबर	समस्त डेनियर	बेलारूस	बेलारूस	जेएसएस नेफ्टान पालीमिर	जेएसएस नेफ्टान पालीमिर	2886
2.	5501.30 5503.30	एक्रेलिक फाइबर	समस्त डेनियर	बेलारूस	बेलारूस	निर्यातक तथा उत्पादक से इतर अन्य कोई संयोजन		2886
3.	5501.30 5503.30	एक्रेलिक फाइबर	समस्त डेनियर	बेलारूस	जापान से इतर अन्य काई देश	निर्यातक तथा उत्पादक का कोई संयोजन		2886
4.	5501.30 5503.30	एक्रेलिक फाइबर	समस्त डेनियर	जापान से इतर अन्य कोई देश	बेलारूस	निर्यातक तथा उत्पादक का कोई संयोजन		2886
5.	5501.30 5503.30	एक्रेलिक फाइबर	1.5 डेनियर से लेकर 8 डेनियर तक	जापान	जापान	निर्यातक तथा उत्पादक का कोई संयोजन		1681
6.	5501.30 5503.30	एक्रेलिक फाइबर	1.5 डेनियर से लेकर 8 डेनियर तक	जापान	बेलारूस से इतर अन्य काई देश	कोई	कोई	1681
7.	5501.30 5503.30	एक्रेलिक फाइबर	1.5 डेनियर से लेकर 8 डेनियर तक	बेलारूस से इतर अन्य काई देश	जापान	कोई	कोई	1681

68. इस आदेश को केन्द्र सरकार द्वारा स्वीकार किए जाने के बाद इसके खिलाफ कोई अपील उक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी ।

पी. कें. चौधरी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY****(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 5th July, 2010

**Final Findings****(Sunset Review)**

**Subject: - Sunset Review Investigation of Anti- dumping duty imposed on imports of Acrylic Fibre originating in or exported from Japan and Belarus.**

**F. No. 15/34/2008-DGAD.**—Whereas having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty or Additional Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (herein after referred to as ADD Rules), vide Notification Number 15/04/2003-DGAD dated 10.11.2004, the Designated Authority (herein after referred to as the Authority) notified its final findings in the review investigation recommending continuation of antidumping duty on import of Acrylic Fibre (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from Japan. The original anti dumping investigation was initiated on 7.01.1998 and definitive anti dumping duty was recommended vide final findings Notification No.32/1/97-ADD dated 24.12.1998 on Italy, Spain, Portugal and Japan. However, in the first Sunset review, the continuation of anti dumping duty was recommended only from Japan. On the basis of findings, definitive anti-dumping duties were imposed on the subject goods by the Department of Revenue vide notification No. 114/2004-Cus. dated 21.12.2004.

2. And whereas the Authority vide Notification No. 14/5/2003 dated 7<sup>th</sup> December 2004 notified its final findings in anti-dumping investigation recommending definitive antidumping duty on imports of Acrylic Fibre originating in or exported from Belarus. On the basis of findings, the definitive anti-dumping duties were imposed on the subject goods by the Department of Revenue vide Customs Notification No. 117/2004 dated 30.12.2004.

3. Forum of Acrylic Fibres Manufacturers, New Delhi through the participating companies, viz., M/s. Indian Acrylics Ltd, M/s Pasupati Acrylon Ltd. and M/s. Vardhman Acrylics Ltd., has approached the authority with an application under Section 9A(5) of the Customs Tariff Act, 1975, as amended in 1995 read with Rule 23 of the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 requesting sunset review of anti

dumping duties earlier imposed on imports of Acrylic Fibre from Japan & Belarus. In its application, the applicant substantiated the need for a review of the anti dumping duty imposed on the subject goods originating in or exported from Japan & Belarus. The petitioner claimed with prima facie evidence that cessation of anti dumping duty imposed on subject goods from these countries is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury and have requested for continuation and enhancement of the anti dumping duty imposed on subject goods from subject countries for a further period of five years.

4. And whereas in view of judgment of Hon'ble Delhi High Court in WP No 16893 of 2006 holding that sunset review is mandatory, the Authority initiated a sunset review dated 6<sup>th</sup> July 2009 in accordance with Section 9 A (5) of the Act, read with Rule 23 of Antidumping Rules, to review the need for continued imposition of duties in force and whether the expiry of the duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury.

#### A. PROCEDURE

5. The procedure described below has been followed with regard to this investigation:

- i) After initiation of the review investigation, the Authority notified the domestic industry, all known exporters/producers in the subject countries and known importers, calling for questionnaire responses and necessary information in accordance with Rule 6(4);
- ii) The Embassy of the subject countries in New Delhi was intimated about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers in their respective countries to respond to the questionnaire within the prescribed time.
- iii) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following known exporters/producers from Japan and Belarus.

S.N.	Company's Name
1.	M/s. JSC "Polymir", 211440, Novopolotsk, Vitebsk Region, Republic Of Belarus
2.	ITOCHU Corporation, 5-1, Kita-Aoyama 2-chome Minato-ku, Tokyo 107-8077, Japan, TEL: 03-3497-2121
3.	Asahi Kasei Chemicals, 1-105 Kanda Jinbocho, Chiyoda-ku, Tokyo 101-8101 Japan
4.	Mitsui & Co., Bldg. 2-1, Ohtemachi 1-chome Chiyoda-ku, Tokyo 100-0004, Japan

- iv) Only one exporter from Belarus, M/s. JSC Polymir, responded to the questionnaire in response to the above notification.

- v) Questionnaires were sent to the following known importers, users and associations of the subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:

S.N.	Company's Name
1.	Rajasthan Spinning & Weaving Mills Ltd. Bhilwara Bhawan, 40-41, Community Center, New Delhi – 110 065
2.	Vardhaman Spinning & General Mills Chandigarh Road, Ludhiana – 141 011, Punjab
3.	Deepak Spinners Limited SCO 16, 2nd floor, Sector 26, Chandigarh – 160 019
4.	Malwa Cotton Spinning Mills Ltd. Industrial Area, 'A', Ludhiana – 141 003, Punjab.
5.	Shiwaliya Spg. & Wvg. Mills (P) td. Village Dhandari Khurd, G.T. Road Dhandari khurd, Ludhiana
6.	Deepak Spinners Limited 121, Industrial Area, Distt. Solan Baddi (H.P)
7.	Shiva Fabricator (P) Limited Village IRAQ, Kuhara Machiwara Road, Machiwara, Distt. Ludhiana
8.	Supreme Tex Mart Limited 424 Industrial Area –A, Cheema Chowk, Ludhiana
9.	Yogendra Worsted Limited Village Lal Kalan, Near Neelam Bridge, Tehsil Samrala Distt. Ludhiana
10.	Shree Rajasthan Syntex Limited Post Box 5, Simalwara Road, Village Udaipur Dungarpur, Rajasthan
11.	Banswara Syntex Limited Industrial Area, Dahad Road, Post Box 21, Banswara, Rajasthan
12.	Ganga Acrowools Limited G.T. Road, Village Kot Sekhon, The. Khanna Ludhiana
13.	Shital Fibres Limited A-17, Focal Point (Extn.), Jalandhar
14.	Arisudana Industries Limited Village Jaspalan (Doraha), Tehsil Khanna, Ludhiana
15.	Sportking India Limited Village Meharban, Rahon Road, Ludhiana
16.	Texas Woollen Mills (P) Limited Machiwara Road, Kohara, Distt. Ludhiana
17.	Jindal Cotex Limited V.P.O. Jugiana, G.T. Road, Ludhiana
18.	Garg Acrylics Limited Kanganwal Road, P.O. Jugiana, G.T. Road, Ludhiana

- vi) The period of investigation for the purpose of the present review is 1st Jan 2008 to 31st Dec 2008 (12 months). However, injury analysis covered the years 2005-06, 2006-07, 2007-08 and Jan 2008- Dec 2008.
- vii) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigations;
- viii) The following domestic producers of the subject goods have provided their cost and injury information for injury investigation.
  - a. M/s Indian Acrylic Ltd;
  - b. M/s Pasupati Acrylon;
  - c. M/s Vardhaman Acrylic
- ix) The Authority has considered all views expressed and submissions made by various interested parties to the extent they are relevant for the present investigation.
- x) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- xi) The Authority verified the information furnished by the domestic industry to the extent possible to examine the injury suffered and to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicants so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
- xii) The Authority also carried out on the spot verification of data of the cooperating exporter ie. JSC Naftan Polymir, Belarus, to determine the market economy status, normal value and dumping margin as per the Rules.
- xiii) The Authority held a public hearing on 18th December 2009 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of domestic industry and exporter of the subject goods from Belarus. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. The written submissions/rejoinders received from interested parties have been considered and incorporated in this findings to the extent they are relevant and substantiated with evidence.
- xiv) Under Rule 16 of the Anti Dumping Rules, a disclosure of essential facts/basis for the present findings was issued on 8<sup>th</sup> June 2010 to known interested parties and the comments received on the same have been appropriately addressed in the final findings.

- xv) \*\*\*In the statement represents information furnished by interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

**B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND 'LIKE ARTICLE'**

6. The product involved in the original investigation, previous sunset review and this sunset review is Acrylic Fibre. Acrylic Fibre is a long chain of synthetic polymer composed of at least 90% by weight of Acrylonitrile units. Acrylic Fibre can be acrylic staple fibre, acrylic tow or acrylic top. Acrylic staple fibre, acrylic tow and acrylic top are known as acrylic fibre in the commercial parlance. The only difference between acrylic staple fibre and acrylic tow is the difference in length. In case of length more than 2 meters, it is known as tow and in case of cut lengths, it is known as staple fibre. It is classified under Chapter 55 of the Customs Tariff Act, 1975. It is further classified under the heading 550130 and 550330 of schedule-I of Custom Tariff Act. The classification is, however, indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.

7. None of the interested parties has filed any submission in regard to this aspect.

**Examination by Authority**

8. The Authority notes that the present investigation is a sunset review investigation and none of the interested parties has raised any argument on the issue of product under consideration. The Authority therefore holds that the goods produced by the domestic industry are like articles to the subject goods imported from the subject countries.

**C. Standing and scope of the Domestic Industry**

9. Subsequent to initiation, Forum of Acrylic Fibre Manufacturers consisting of M/s. Indian Acrylics Ltd., M/s. Vardhman Acrylics Ltd and M/s. Pasupati Acrylon Ltd. filed its injury and costing information. The Forum commands 100% of Indian Production and thus satisfies the requirement of 'standing' and constitutes 'domestic industry' within the meaning of the AD Rules.

10. None of the interested parties has filed any submission with regard to domestic industry and its standing.

**Examination by the Authority**

11. Rule 2(b) under the AD Rules provides as follows:-

*"(b) "domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a*

*major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'domestic industry' may be construed as referring to the rest of the producers only".*

12. The present review petition was filed by Forum of Acrylic Fibre Manufacturers consisting of M/s. Indian Acrylics Ltd., M/s. Vardhman Acrylics Ltd and M/s. Pasupati Acrylon Ltd.. The Authority notes that members of the Forum of Acrylic Fibre Manufacturers account for 100% of total Indian production. Therefore, M/s Indian Acrylics Ltd., M/s. Vardhman Acrylics Ltd and M/s. Pasupati Acrylon Ltd. constitute 'domestic industry' within the meaning of the AD Rules. Further it is noted that none of the interested parties has filed any submission with regard to domestic industry and its standing. Therefore, the Authority holds that the applicants have standing as domestic industry under Rule 2(b) of Anti Dumping Rules.

**D.1 DETERMINATION OF NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN**

**Japan**

**Normal Value**

13. No exporter from Japan has responded to the Initiation of the present Sunset Review. Therefore, the Authority determines the normal value, export price and dumping margin on the basis of facts and information available with it. Accordingly, normal value is determined for all exporters of subject goods from Japan as US\$\*\*\*/MT on the basis of international prices of raw material reported by the domestic industry and all other norms including consumption norms of the efficient domestic industry.

**Export Price**

14. Post-disclosure comments of the domestic industry:-

- (i) The export price for Japan has been adopted on the basis of Japan Customs data and the dumping margin is negative. Indian producers submit that since imports as per DGCI&S is available, the same should have preference over all other data. This is the practice adopted by the Authority;
- (ii) Product under consideration in this case is Acrylic Staple Fibre, Acrylic Tow and Acrylic Top. However, the customs classification includes Modacrylic also. Modacrylic is not in the scope of the product under consideration. Since customs classification includes Modacrylic, summary customs data cannot be relied upon for determining import price. Further, Modacrylic price is significantly higher than Acrylic Fibre price. Indian producers are enclosing complete import statement (as per IBIS) which also includes Modacrylic (Annexure-1). Since Modacrylic price is



significantly higher than Acrylic Fibre price, summary import data shows much higher prices.

- (iii) Acrylic Fibre is classified into two customs classifications i.e. 55013000 and 55033000. It appears that the disclosure statement is based only on 55013000. If the imports reported under other classification is also included, the average import price even after including Modacrylic is much lower than the price adopted in the disclosure statement.
- (iv) In view of the fact that (a) modacrylic is also been included in the import data; (b) exports reported by Japan under 55033000 has not been included, the Indian producers submit that the dumping margin may be reviewed. It would be seen that the dumping margin is negative, even if Japan Customs data including Modacrylic is considered. The dumping margin however is significantly positive if Modacrylic is excluded.

### **Examination by the Authority**

15. The Authority has considered the data from World Trade Atlas as the basis for export price of Japan as the same reports higher volume of exports from Japan compared to DGCI&S. Further, the weighted average FoB price of the subject goods has been computed on the basis of both the customs classifications, namely, 55013000 and 55033000. As regards Modacrylic (HS Code No. 550130 and 550330), the same is covered under PUC being a fibre as per the description under the broad chapter head 55 titled 'man made staple fibres'. Modacrylic is also covered in the PUC as per the petition itself filed by the domestic industry. Therefore, the Authority treats Modacrylic as included in the PUC and accordingly export price in respect of Japan is determined.

16. Therefore, as regards export price, the FoB price of exports from Japan has been sourced from World Trade Atlas which reports highest volume of exports from Japan compared to DGCI&S (the official foreign trade data agency) and IBIS and is determined as US\$ \*\*\*MT. The Authority allows adjustments on commission (\*\*\*%), bank charges (\*\*\*%), inland freight (\*\*\*%) and port expense (\*\*\*%), as considered reasonable by the authority, to arrive at Net Export Price (NEP). Accordingly, NEP for all exporters from Japan is determined as US\$ \*\*\* /MT.

### **Belarus**

17. Only one exporter/manufacturer, M/s JSC Naftan, Plant Polymir has filed its response to exporter's questionnaire. No response has been filed by JSC Naftan to Market Economy Treatment (MET) questionnaire. The information submitted by the exporter was verified by the Authority at the premises of the exporter as per the procedure prescribed. In the absence of response to MET questionnaire, the Authority notes that the said exporter has not claimed market economy status. Therefore, the Authority accords non-market economy treatment to JSC Naftan and other exporters

from Belarus, if any. Accordingly, normal value is determined on the basis of para 7 of Annexure-1 to the Anti Dumping Rules.

### Normal Value

18. As the Authority accords non-market economy status to JSC Naftan, the normal value is constructed based upon constructed cost of production along with reasonable profit of 5%. Thus the constructed normal value for JSC Naftan is determined as US\$ \*\*\*/MT. The Authority adopts the same normal value for other exporters as well from Belarus, if any.

### Export Price

19. As regards export sales to India, during verification of exporter's data, documents namely, sales contracts and related invoices, were submitted by the exporter. These documents did not indicate any direct export sales to India during the POI. These only indicated supplies to third parties in third countries, but no information in respect of exports by these third countries to India was provided. Since JSC Naftan did not have any direct export sales to India during POI, Authority considers export price of Belarus (the country as a whole) to India during the POI, as sourced from International Business Information Services (IBIS) which reports the highest volume of exports for Belarus vis-à-vis DGCI&S and World Trade Atlas, for arriving at net export price. Thus net export price for both JSC Naftan and other exporters from Belarus, if any, is determined as US\$\*\*\*/MT, after considering reasonable adjustments on account of ocean freight (US\$\*\*\*/MT), marine insurance (US\$\*\*\*/MT), commission (\*\*%), bank charges (\*\*%), inland freight (\*\*%) and port expense (\*\*%).

### D.2 Dumping Margin

20. Comparing the normal value and export price at ex-factory level as determined above, dumping margin in respect of exporters from Japan and Belarus is determined as under:-

Country	Exporter	Normal Value US\$/ MT	Export Price US\$/ MT	Dumping Margin US\$/ MT	Dumping Margin %
Japan	All exporters	***	***	Negative	Negative
Belarus	M/s JSC Naftan Polymir, Belarus	***	***	***	9.78
	Other exporters from Belarus	***	***	***	9.78

**E. INJURY AND CAUSAL LINK DETERMINATION****Views of the Domestic Industry**

21. The domestic industry, in its submissions has inter alia argued as follows

- a) The imports from subject countries increased in absolute terms.
- b) Selling price in the domestic market is directly linked to import prices. The domestic industry has to respond to lowest import price from various sources.
- c) Revocation of anti dumping duty shall imply prices of acrylic fibre from these countries declining in the market. Consequently, the domestic industry would be forced to reduce the selling prices.
- d) Any decline in selling price would have its adverse impact on profitability, return on investment and overall profit situation of the domestic industry.
- e) Two other companies – IPCL and Consolidated Fibre have been forced to suspend their operations relating to acrylic fibre in view of persistent dumping of the product in the Country. IPCL was suffering negative value addition in acrylic fibre. Considering the prices of captively produced acrylonitrile, the company was rather faced with negative value addition. Further, Consolidated Fibre was producing only acrylic fibre and has been forced to suspend their production. Injury to these two companies was due to persistent dumping of the product in the Country.
- f) The domestic industry has suffered injury from persistent dumping of the product in the Country. A number of these sources are either attracting anti dumping duties or duties has been recently revoked. Thus, the injury to the domestic industry in this sunset review investigation is required to be seen in the light of existing duties.
- g) The demand for acrylic fibre in India declined. However, while the acrylic fibre capacity in the world is far beyond the demand, Producers in subject countries have been expanding capacities without proportionate increase in their domestic demand, obviously considering export markets. Such capacity expansions are naturally at the peril of other producers.
- h) The imports are still continuing at dumping prices and extent of dumped imports has remained at significant levels in the present investigations. The circumstances, which were prevalent at the time of original investigations, are very much in existence even till date. There has been no change in the circumstances, which only reflects that the dumping would recur at higher levels.
- i) The capacity created by producers in Japan and Belarus is significantly higher than demand in their local market. It would be seen from the table below that the domestic demand in these countries are practically negligible as compared to the capacities established in these countries. In fact, in

respect of Japan, it would not be inappropriate to say that the Japanese producers practically have no option but to look for export market. As against 2000 MT domestic demand, the Japanese producers are holding 2,93,000 MT capacities. Similarly, in respect of Belarus, as against 70,000 mt. capacities, the domestic demand in Belarus is hardly 20,000 mt.

- (j) Production, capacity utilization, sales volume, productivity increased upto 2006-07 and then started declining. Further, the decline in POI is significant as compare to preceding year.
- (k) The profitability of the domestic industry has shown improvement from the base year even the losses started turning out in profits but once again declined in POI.
- (l) The domestic industry is facing continuous dumping of subject goods from the subject countries and other countries. There is no reason or justification to believe that revocation of the duty would not lead to increased or continued dumping at large scale with consequent injury to the domestic industry.
- (m) The imports from subject countries increased in absolute terms, resulting in increase in market share of imports.
- (n) The profitability started declining when the dumped import prices led to a situation of price undercutting and price underselling.

#### **Views of the M/s. JSC Polymir, Belarus**

22. M/s JSC Polymir has made the following arguments on the issue of injury to the domestic industry:

- (a) Anti-dumping duty is not a remedy to the domestic industry.
- (b) The injury to the domestic industry is from factors other than dumped imports.
- (c) The anti dumping duty continued on imports from many countries for more than a decade. Even then, the situation of domestic industry not improved.
- (d) The major factor of injury is increase in raw material prices. This leads to increase in selling prices.
- (e) The increase in prices will force the user industries to shift to other alternatives. The very same fact mentioned by Indian Acrylics in its Directors' Report.
- (f) Decline in the domestic demand of acrylic fibre is the cause of injury to the domestic industry.
- (g) There is no justification for claim of injury from imports from Belarus
- (h) The price suppression is the result of availability of substitutes not the import prices.
- (i) Imports from Belarus are only 421 MT over the entire period.
- (j) India is not the target country for exporters.
- (k) The injury is caused by low price imports from Thailand.
- (l) Positive growth has been seen in physical parameters of domestic industry.
- (m) Japan has surplus capacity not Belarus.
- (n) Export price of Belarus is higher than Japan and Thailand.

- (o) No causal link between imports and closure of some Domestic Producers
- (p) The closure of Consolidated Fibre is due to inefficiencies and other intrinsic factors.
- (q) Decline in domestic demand, threat from substitutes, high volume of low priced imports are some reasons of closures.
- (r) Decline in capacity utilization is mere manipulation of data.
- (s) No decline in capacity utilization during the POI from base year.
- (t) The domestic industry has shown installed capacity as 85000 MT in 2005 06, which is actually 88500 MT.
- (u) Except Indian Acrylics, other two producers are operating at more than 100% capacity utilization.
- (v) The decline in sales volume of domestic industry is less than the decline in demand.
- (w) Absence of price suppression/depression due to imports.
- (x) In 2005-06, the cost of production is less, anti-dumping duty is in place even then Domestic industry could not earn any profit.

### **Examination by the Authority**

23. The Authority has considered various arguments put forth by various interested parties in their submissions and issue of continuation of injury to the domestic industry has been examined in the light of these arguments made before the Authority. The Authority notes that the current dumping margin from Belarus is above de minimis level. The Authority therefore proceeds to examine the current injury to the domestic industry before proceeding to examine the likelihood of dumping and injury on account of imports from the subject countries.

### **Cumulative assessment**

24. Annexure II (iii) of the Anti Dumping Rules requires that in case imports of a product from more than one country are being simultaneously subject to anti dumping investigations, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such dumped imports, in case it determines that: -

- (i) The margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two percent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three percent of the imports of the like article or where the export of the individual countries less than three percent, the imports cumulatively accounts for more than seven percent of the imports of like article, and;
- (ii) Cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles.

25. Following are relevant in this regard: -

- (a) The margin of dumping from Belarus is more than the limit prescribed above;
- (b) Cumulative assessment of the effects of imports is appropriate since the exports from the subject countries directly compete with the like goods offered by the domestic industry in the Indian market, as would be seen from the following information: -
- i) The product manufactured by the producers from the subject countries inter-se and in comparison to the product manufactured by domestic industry has comparable properties. In other words, goods supplied by various subject countries and by the domestic industry are inter-se like articles.
  - ii) There are common parties who are resorting to use of imported material and domestic material. Imported and domestic materials are, therefore, being used interchangeably and there is direct competition between the domestic product and imported product.
  - iii) The landed values of such imported material from subject countries are below the selling price of domestic industry. This clearly establishes competition amongst Foreign Producers inter-se as also with Indian Producers.
  - iv) The exporters from the subject countries and domestic industry have sold the same product in the same periods to same customer. The petitioner has been selling the product directly as also through their agent and exporters from subject countries are exporting directly as also through their agent. The sales channels are comparable.
  - v) Volume of imports from each of the subject countries is significant.
  - vi) Domestic producer and exporters from the subject countries sell the like product to the same category of customers and both are competing in the same market. Both are being used by the consumers interchangeably.

26. In view of the above, the Authority notes that it is appropriate to cumulatively assess the effects of imports of the subject goods from Japan and Belarus on the domestically produced like article, in the light of conditions of competition between the imported products and the like domestic product.

27. Annexure-II of the AD Rules provide for an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the

Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.

28. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry para (iv) of Annexure-II of the AD Rules states as follows.

*"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the Industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment wages growth, ability to raise capital investments."*

### **Volume effects of the dumped imports**

29. With regard to the volume of the dumped imports, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. The position in this regard is as under:-

Particulars	Units	2005-06	2006-07	2007-08	Jan'08 to Dec'08
<b>Import volumes</b>					
Belarus	MT	2330	260	402	803
Japan	MT	770	1475	877	2342
Subject Countries	MT	3099	1736	1279	3145
Other countries	MT	7375	8708	6227	10143
Total Imports	MT	10475	10444	7505	13288
<b>Market Share in Imports</b>					
Belarus	%	22.24	2.49	3.84	6.04
Japan	%	7.35	14.08	8.37	17.62
Subject Countries	%	29.59	16.57	12.21	23.66
Other countries	%	70.41	83.38	82.96	76.33
Production of DI	MT	75378	83868	77513	76840
Import from subject countries	MT	3099	1736	1279	3145
Import from subject countries as a percentage of production of domestic industry	%	4.11	2.07	1.65	4.09

30. From the above, the Authority notes that:

- a) The volume of imports from Japan increased significantly in the period of investigation vis-à-vis base year. Japan's share in total imports has increased from 7.35% during base year to 17.62% during POI despite anti dumping duty in place. The volume of imports from Belarus though declined during POI vis-à-vis base year, shows an increase vis-a-vis previous year.
- b) Cumulative imports from subject countries have increased marginally in POI as compared to base year in absolute terms and in relation to imports in India. However, the volume of imports has more than doubled as compared to previous year in POI.

#### **Demand, Output and Market Share**

31. Demand and market share reflect trends as shown in table below:-

Particulars	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	Jan'08 to Dec'08
Sales of domestic Industry	MT	68249	75197	73098	69453
Other Producers	MT	32661	6186	0	0
Total Imports	MT	10475	10444	7505	13288
Total Demand	MT	111385	91827	80603	82741
Trend	Indexed	100	82	72	74
<b>Market share in demand</b>					
Domestic Industry	%	61.27	67.51	65.63	62.35
Other Producers	%	29.32	6.74	0.00	0.00
Subject Countries	%	2.78	1.89	1.59	3.68
Import from Other countries	%	6.62	9.48	7.73	12.27

32. It is evident from the above table that:

- a) Demand of subject goods has been determined by addition of domestic sales and all imports from all countries. The Authority notes that demand for the subject goods declined from base year to POI.
- b) The share of other domestic producers, which has come down from 29.32% during the base year to nil during the POI, appears to have been taken over by imports from other countries which is quite substantial during the POI. Given this fact and given the fact that there is a marginal increase in the market share of imports from subject countries and marginal increase in the share of domestic industry as well, the adverse volume effect of imports from subject countries on the domestic industry is not established.



**Price effects of dumped imports- price undercutting, suppression and depression:**

33. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.

**Price undercutting**

34. The table below indicates the extent of price undercutting caused by dumped imports from subject countries:-

Particulars	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	Jan'08 to Dec'08
Net Sales Realisation	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	117.34	126.82	133.52
Landed Price					
Belarus	Rs./Kg	84.88	79.94	79.29	115.27
Japan	Rs./Kg	114.16	120.82	111.66	123.36
Subject Countries	Rs./Kg	92.16	114.68	101.49	119.31
Price undercutting					
Belarus	Rs./Kg	***	***	***	***
Japan	Rs./Kg	***	***	***	***
Subject Countries	Rs./Kg	***	***	***	***
Price undercutting (%)					
Belarus	%	***	***	***	***
Japan	%	***	***	***	***
Subject Countries	%	***	***	***	***

35. The Authority notes that the dumped imports from Belarus is undercutting the prices of the domestic industry in the market while there is negative price undercutting from Japan.

**Price suppression/depression**

36. In order to assess whether imports from the subject countries were suppressing/depressing the prices of the domestic industry, the Authority has compared the cost of production and net selling price of the domestic industry with the landed price of imports over the injury period, which is given in the following table:

Particulars	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	Jan'08 to Dec'08
Cost of production	Rs./Kg	***	***	***	***

Trend	Indexed	100.00	108.81	116.27	144.78
Net Selling Price	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	117.34	126.82	133.52

37. The Authority notes that whereas both the cost of production and net selling price increased over the injury period, the increase in the net selling price ( i.e. 33% during POI in comparison to base year) is much lower than the increase in the cost of production (i.e. 45% during the POI in comparison to base year). Thus, price suppression has taken place as the domestic industry is not able to realize its net selling price commensurate with increased cost of production.

#### **Economic Parameters relating to the Domestic Industry**

38. Annexure II to the Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.

39. The analysis of the economic parameters has been carried out based on the data provided by three constituents of domestic industry, namely, M/s Indian Acrylics, M/s Ardman Acrylics and M/s Pasupati Acrylon. These parameters have been analysed as under:-

#### **(a) Production, sales, capacity and capacity utilization**

	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	Jan'08 to Dec'08
Installed Capacity	MT	85000	90000	90000	90000
Trend	Indexed	100	106	106	106
Production	MT	75378	83868	77513	76840
Trend	Indexed	100	111	103	102
Capacity Utilization (%)	%	88.68	93.19	86.13	85.38
Trend	Indexed	100	105	97	96
Sales volumes	MT	68249	75197	73098	69453
Trend	Indexed	100	110	107	102

40. The above data shows that:

- (i) The production, capacity utilization and sales of the domestic industry have increased upto 2006-07 but declined thereafter in the 2007-08 and the period of investigation.
- (ii) The domestic industry has not been able to improve its production to the extent of capacity, thereby resulting in decline in capacity utilization.

**(b) Profitability**

41. The profitability, profits and cash flow of the domestic industry are given in the following table:-

	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	Jan'08 to Dec'08
Cost of production	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	108.81	116.27	144.78
Net Selling Price	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	117.34	126.82	133.52
Profit/Loss	Rs./Kg	***	***	***	***
Trend	Indexed	(100)	14	35	(307)
Profit/Loss	Rs.Lacs	***	***	***	***
	Indexed	-100	15	38	-312
Interest	Rs.Lacs	***	***	***	***
	Indexed	100	110	99	90
Profit before Interest	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	(100)	442	502	(1,067)
Net Fixed Assets	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	98	91	85
Working Capital	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	120	91	(30)
Capital Employed - NFA	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	101	91	69
Return on Capital Employed (NFA Basis)	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	(100)	439	553	(1,551)
Cash Profit	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	(100)	963	1,180	(2,064)

42. From the above, it is observed that the profitability of the domestic industry has improved upto 2007-08 but then declined significantly. During the period of investigation, the domestic industry incurred financial losses. The return on capital

employed and cash profits followed the same declining trend and became negative during POI.

43. It is seen from the above table that on year to year basis, the domestic industry was able to increase the domestic selling prices more than the increase in the cost of sales till 2007-08. However, the trend reversed in the POI and the domestic industry could not increase its sales realization in line with the increase in cost of sales thereafter. The data shows that the average cost of sales as compared to base year increased by 45% in POI as compared to 2005-06. During the same period, the average selling price increased by 33%. The increase in cost of production is much higher than the increase in net selling price of the domestic industry indicating a price suppression effect.

**(c) Employment and Wages**

44. Employment & Wages levels of the domestic industry are given in the following table, which indicates that number of employees is reduced during POI compared to base year though wages have increased:-

	2005-06	2006-07	2007-08	Jan'08 to Dec'08
Number of employees	***	***	***	***
Indexed	100	100	100	97
Wages Rs. Lacs	***	***	***	***
Indexed	100	105	114	119

**(d) Productivity**

45. The Productivity of the domestic industry, as reflected in terms of production per employee as well as production per day, is given in the following table

	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	Jan'08 to Dec'08
Production	MT	75378	83868	77513	76840
Employees	Number	***	***	***	***
Productivity	MT/No.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	111	103	105
Productivity (considering 350 days p.a.)	MT/day	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	111	103	102

The productivity of the domestic industry improved during POI compared to the base year.

(e) **Inventory**

	Unit	2005-06	2006-07	2007-08	Jan'08 to Dec'08
Inventory	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	119	97	162
Sales in MT	MT	68249	75197	73098	69453
Inventory for no. of days sales	Days	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	108	90	159

46. The average inventory in terms of number of days' sales increased over the injury period. In the base year, it was equivalent \*\*\* days whereas in POI it increased to \*\*\*days.

(f) **Ability to raise capital investment**

47. There have been no capacity additions during the period of investigation. The ability to raise capital investments may be adversely affected with the negative cash profits in the period of investigation.

(g) **Growth**

48. Growth of the domestic industry in terms of parameters like production, sales, capacity utilization, profits and profitability was positive upto 2007-08. The same however became negative in the investigation period.

**Magnitude of Dumping Margin**

49. Dumping margins for Belarus is above de-minimis and is substantial. However dumping margin for Japan is negative.

50. It is thus seen that imports of the product under consideration have remained significant in the POI. After showing decline upto 2007-08, the volume has once again increased significantly during the investigation period. Imports were undercutting the prices of the domestic industry. Profits, return on investment, cash profits increased upto 2007-08 and declined in period of investigation. The domestic industry was forced to sell the product at prices below non-injurious price. Dumping margin is positive for Belarus in the period of investigation.

**F. Magnitude of Injury and Injury margin**

51. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry as determined by the Authority has been compared with the landed value of the imports from subject countries for determination of injury margin during the POI. Thus compared, the injury margin is determined as under:

Injury Margins	UOM	JSC Polymir	Other exporters from Belarus	Japan
CIF Price	USD/MT	***	***	***
Landed Price	USD/MT	***	***	***
NIP	USD/MT	***	***	***
Injury Margin	USD/MT	***	***	***
Injury Margin	%	10-15%	10-15%	3-8%

**G. Other Known factors and Causal Link**

52. As recorded earlier the responding exporter has raised several arguments in their written submissions during the course of the investigation which essentially argues that the domestic industry has improved its overall performance and injury if any, has been suffered because of factors other than the dumped imports. The arguments of the interested parties have been examined by the Authority with reference to mandatory factors and other factors that might have affected the condition of the domestic industry as follows:

**i)- Volume and prices of imports from other sources**

53. During the POI, other than the subject countries, imports have taken place from several other countries including countries against which antidumping duty is in force. The data also shows that imports from countries attracting antidumping duty have increased substantially. Imports from countries not attracting duty have declined. Further, the goods have been imported from several countries and volumes of import from individual countries are small and at similar price bands.

**ii) Contraction in demand and / or change in pattern of consumption**

54. The Authority notes that domestic demand of the product under consideration has shown a decline of about 26% during the POI. It is noted that the decline in demand coincides with suspension of production by Consolidated Fibre and the extent of decline in demand is almost in the range of production of Consolidated Fibre. However, current demand for the product continues to be in the region of current Indian capacities. It is therefore not established that the current injury to the domestic industry occurred due to lack of demand for the product in the Country.

### iii) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

55. The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. The participating domestic industry constitutes total capacity of subject goods in the country. The Authority notes that though major proportions of imports from various other sources are attracting antidumping duty, antidumping duty unpaid landed value of imports from these sources is within a very narrow band indicating severe competition between various sources for the domestic market.

### iv) Development of technology and export performance

56. No party has raised any issue with regard to developments in technology as being the cause of injury to the Domestic Industry. Nor there appears to be any significant development in technology that the same could be the principal cause of injury to the domestic industry.

### v) Export Performance

57. The Authority notes that exports of the product under consideration by the domestic industry have declined substantially from the base year although there is an increase in export sales during 2007-08 as compared to base year. Moreover, injury to the domestic industry has been assessed on the basis of their domestic performance only and injury, if any, caused due to their export performance has not been attributed to the dumped imports.

Particulars	Units	2005-06	2006-07	2007-08	Jan'08 to Dec'08
Export Sales	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	118	119	55

### vi) Productivity of the Domestic Industry

58. Productivity of the domestic industry in terms of labour output and daily output has shown improvement during POI. Therefore, the Authority notes that productivity is not a factor causing injury to the domestic industry. In fact domestic industry has tried to reduce its losses in its domestic operation through improvement in productivity.

### H. Likelihood of Continuance and Recurrence of Dumping and Injury

59. The following factors have been brought before the Authority for examination of likelihood of continuation or recurrence of injury to the domestic industry.

- The domestic industry has pleaded that in a sunset review, the Authority is required to examine the likelihood of continuation or recurrence of dumping

and injury to arrive at a decision to continue or vary or remove the duty so as to offset dumping.

- b) The producers from subject countries are dumping the material in the Indian market. Though there is a significant increase in the raw material prices, the export price of the exporters has not shown proportionate increase apparently indicating absorption of the cost by the exporters.
- c) That volume of imports from subject countries has increased significantly in POI in spite of the antidumping duty in existence.
- d) The level of dumping margin in POI is not only de-minimis but also significantly high.
- e) The producers are holding significant surplus capacities and their domestic demand is significantly below the capacities created by them. The capacity created by producers in Japan and Belarus is significantly higher than demand in their local market. As against 2000 MT domestic demand, the Japanese producers are holding 2,93,000 MT capacities. Similarly, in respect of Belarus, as against 70,000 mt. capacities, the domestic demand in Belarus is hardly 20,000 mt.
- f) Production of acrylic fibre is showing a decline in the international market in view of decline in demand for the product. Revocation of duty would lead to intensified injury to the domestic industry.
- g) Japan & Belarus have set up production capacities far beyond their domestic demand. Resultantly, the producers in these countries are faced with decline in market for their product.
- h) Producers in Japan are closing or curtailing operations gradually due to lack of demand in the international market. Revocation of duty will open flood gates for them.
- i) Even when there is a significant increase in the raw material prices, the export price of the exporters has not shown proportionate increase apparently indicating absorption of the cost by the exporters.
- j) The current level of exports is not to the extent of capacities created by subject countries exporters/producers.
- k) The exports from subject countries to third countries are very high. Once the duty is revoked the volume of exports will be shifted to Indian market as the Indian market is very lucrative.

60. Barring the responding exporter from Belarus, none of other interested parties have made any submissions with regard to likelihood of injury. Views expressed by the Belarus exporter have been brought out hereinabove.

#### **Examination by Authority**

61. The Authority notes that the volume of imports from Japan has moved upwards to 2342-MT during the POI compared to the volume of 877 MT during the previous year, i.e., 2007-08, which is an increase by more than 150%. Further Japan's share in total imports has increased from 7.35% during the base year to 17.62% during POI despite anti dumping duty in place. This indicates likelihood of dumping from Japan and consequential injury to the domestic industry in the case of revocation of duty, though



the dumping margin for Japan in the present proceedings is negative. Therefore, the Authority holds that the current level of anti dumping duty will be continued in respect of Japan. As regards Belarus, there is only one producer/exporter of subject goods, namely, JSC, Naftan (Polymir). It is found that the capacity of M/s JSC, Naftan is 63,200 MT and the production is at 98% of the capacity during 2008 and about 91% during 2009. Further, the total export of JSC, Naftan is about 80% of the total sales and about 45% of the exports is to the Asian countries during the year 2008. In the year 2009, total exports of JSC, Naftan is about 80% of the total sales and exports to Asian countries is about 60%. From this, it is apparent that the production of the subject goods in Belarus mainly caters to the export market, a large chunk of which is constituted by Asian countries. Therefore, in the case of revocation of AD duty on Belarus, the volume is likely to be diverted to India at a dumped price. Dumped imports, in turn, are likely to cause injury to domestic industry in the form of price undercutting and/or price underselling.

62. The Authority on the basis of analysis of injury parameters, non-attribution analysis of other factors and likelihood analysis of dumping and injury, concludes that the domestic industry has suffered injury during POI and the same has been caused by dumped imports. Further, there is a likelihood of dumping from the subject countries and consequential injury to the domestic industry

#### **I. Indian industry's interest & other issues**

63. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

#### **J. Conclusion**

64. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- (i) The subject goods has been exported to India from Belarus below the normal value. Though the same from Japan is above the normal value during POI, there is a likelihood of dumping from Japan and consequential injury in case of revocation of duty.
- (ii) The domestic industry has suffered material injury;
- (iii) The material injury has been caused by the dumped imports from Belarus and is likely to be caused by dumping of subject goods from Japan in case of revocation of duty.

**K. Recommendations**

65. The Authority notes that in their post-disclosure submission, the domestic industry has requested for modifying the form of duty from benchmark to fixed form on the ground of significant variation in raw material prices, particularly, the prices of Methylene Acrylate (MA) and Acrylonitrile (ACN) which are the major raw materials for the subject goods. Further domestic industry has stated that if the modification is not feasible, the Authority may increase the benchmark appropriately to the extent of cost increases to reflect the current raw material prices. Further a request has been made to recommend anti dumping duty in US\$.

66. The Authority has examined the issue and holds that In view of positive determination of likelihood of dumping and injury on account of imports from subject countries, continuation of the measure is required against imports from these countries. However, considering the current level of dumping from Japan and Belarus and performance of the domestic industry, the Authority is of the opinion that the measure in force needs to be appropriately revised. Since the dumping margin from Japan is determined as negative, the authority holds that the current level of anti dumping duty for the exporters from Japan already in force will be continued in view of positive determination of likelihood of dumping and injury. On the other hand, the anti dumping duty on exporters from Belarus is revised in the light of positive and revised dumping margin and revised injury margin. Thus, the Authority considers it necessary to recommend anti-dumping duty on imports of subject goods from Japan and Belarus in the form and manner described hereunder.

67. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the margin of dumping or margin of injury whichever is lesser, so as to remove the injury to the domestic industry. Considering that the duty in the original investigation was imposed on reference price basis, the Authority recommends continuation of definitive antidumping duty, on all imports of subject goods originating in or exported from Japan, as the difference between the landed value of imports in US\$/MT and the reference price as indicated in Col 9 of the table below, if the landed value at the time of importation is below the value indicated at Col.9. In respect of imports of the subject goods originating in or exported from Belarus, considering that the duty in the original investigation was imposed on reference price basis, the Authority recommends definitive anti dumping duty as the difference between the amount mentioned in column 9 of the table below and the landed value of imports of the subject goods in US\$/MT at the time of importation. For this purpose, landed value of imports will be determined as the value of the goods as assessed by Customs plus applicable basic Customs duty.

**Duty Table**

S. No	Sub-Heading	Description of Goods	Specification	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount (US\$/MT)
1.	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	5501.30 5503.30	Acrylic Fibre	All Denier	Belarus	Belarus	JSC Naftan Polymir	JSC Naftan Polymir	2886
2.	5501.30 5503.30	Acrylic Fibre	All Denier	Belarus	Belarus	Any other combination of exporter and producer		2886
3.	5501.30 5503.30	Acrylic Fibre	All Denier	Belarus	Any other country other than Japan	Any combination of exporter and producer		2886
4.	5501.30 5503.30	Acrylic Fibre	All Denier	Any other country other than Japan	Belarus	Any combination of exporter and producer		2886
5.	5501.30 5503.30	Acrylic Fibre	Ranging from 1.5 Denier to 8 Denier	Japan	Japan	Any combination of exporter and producer		1681
6.	5501.30 5503.30	Acrylic Fibre	Ranging from 1.5 Denier to 8 Denier	Japan	Any other country other than Belarus	Any	Any	1681
7.	5501.30 5503.30	Acrylic Fibre	Ranging from 1.5 Denier to 8 Denier	Any other country other than Belarus	Japan	Any	Any	1681

68. An appeal against this order, after its acceptance by the Central Government, shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

P. K. CHAUDHERY, Designated Authority